श्री कांति मणि विहार,
नाशिक
प्रतिष्ठा
महोत्सव
विशेषांक

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला का मासिक मुख-पत्र

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 11 | अंक : 4 | 5 जुलाई : 2014 | मूल्य : 20 रु.

श्री कांति
मणि विहार

नाशिक

प्रतिष्ठा
महोत्सव

आगम मंजूषा

परमात्मा महावीर

जह वा विसगंडुसं, कोई घेत्तुण नाम तुण्हिक्को।
अण्णेण अदीसंतो, किं नाम ततो न व मरेज्जा।

- सूत्रकृतांग निर्युक्ति गाथा ५२

जिस प्रकार कोई चुपचाप लुकछिपकर विष पी लेता है, तो क्या वह उस विष से नहीं मरेगा? अवश्य मरेगा। उसी प्रकार जो छिपकर पाप करता है, तो क्या वह उससे दुषित नहीं होगा? अवश्य होगा।

पर्युषण महापर्व

- पर्युषण प्रारंभ- भाद्रपद वदि 12 शुक्रवार ता. 22 अगस्त 2014
- कल्पसूत्र प्रारंभ- भाद्रपद वदि 14 रविवार ता. 24 अगस्त 2014
- मणिधारी जिनचन्द्रसूरि पुण्यतिथि- भाद्रपद वदि 14 रविवार ता. 24 अगस्त 2014
- जन्म वांचन- भाद्रपद सुदि 1 मंगलवार ता. 26 अगस्त 2014
- संवत्सरी महापर्व- भाद्रपद सुदि 4 शुक्रवार ता. 29 अगस्त 2014

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	04
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	07
4. तीन सवाल	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	09
6. श्रमण चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	13
8. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	18
10. मेरे बारे में मेरी अनुभूति	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	20
10. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	22
11. श्री कांति मणि विहार नाशिक विशेषांक	साध्वी विश्वज्योतिश्रीजी म.सा.	23-45
11. समाचार दर्शन	संकलन	46-57
14. जहाज मंदिर पहेली 97 का सही उत्तर		58
15. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-99	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	59
16. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	62

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 11 अंक : 4 5 जुलाई 2014 मूल्य 20 रू.

संयोजन : आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.
अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ	: 7,000 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

लक्ष्य का निर्धारण करें

वस्तु का मूल्य नहीं है, मूल्य उसके उपयोग का है। उपयोग पर ही आधरित है कि आपने उस वस्तु को कितना मूल्य दिया.. उसका कितना महत्व स्वीकार किया।

पत्थर वही है, उससे पुल का निर्माण भी किया जा सकता है। और दीवार भी बनाई जा सकती है। पुल दो किनारों को जोडने का कार्य करता है। तो दीवार एक को दो में विभक्त करने का!

पाषाण खण्ड वही था। उसका उपयोग कैसे किया, इसी में उसके महत्व का बोध होता है।

पैसा वही है, उससे व्यक्ति मंदिर में चढाने के लिये अक्षत भी खरीद सकता है।

और उससे शराब भी खरीदी जा सकती है। एक में सदुपयोग है... एक में दुरुपयोग!

वही मन है, जिससे हम मोक्ष मार्ग की आराधना कर सकते हैं।

वही मन संसार बढाने का काम भी कर सकता है।

शब्द वही है, उन्हीं शब्दों से किसी के दिल के घाव पर मरहम लगाया जा सकता है। तो उन्हीं शब्दों से घाव बनाया भी जा सकता है।

मूल्य वस्तु का नहीं, उसके उपयोग का है।

चिंतन हमें करना है, हम 'प्राप्त' का कैसा उपयोग कर रहे हैं।

जीवन मिला है। जीवन के उपयोग के संदर्भ में हमारा क्या चिंतन है!

जो किसी और जीवन में भी पाया जा सकता है, वह महत्वपूर्ण नहीं है। पर जो और किसी जीवन में पाया नहीं जा सकता... केवल इसी जीवन में वह संभव है, वह प्राप्ति ही महत्वपूर्ण है।

हम किस 'प्राप्ति' के लिये अपनी सांसों को दांव पर लगा रहे हैं। उस प्राप्ति के लिये जो हर जन्म में उपलब्ध है या उस 'प्राप्ति' के लिये जो केवल और केवल इसी जन्म में संभव है।

गहराई से पूर्ण यह विचार हमारे जीवन को दिशा देगा... लक्ष्य का निर्धारण करेगा।

गुरूदेव की कहानियाँ

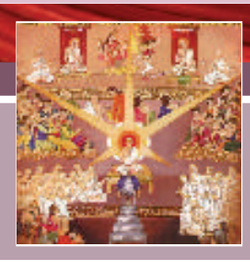

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

श्रद्धा का अभिषेक

गतांक से...

चौथे दिन जब रात्रि को सेठानी सोने के लिए अपने कमरे में जाने लगी, उसी समय सेठजी ने कहा- आज मैं बाहर जा रहा हूँ। कुछ मिष्ठान्न और पूरियाँ मेरे सफर के लिए तैयार कर दो।

सेठानी इस अचानक बनी यात्रा से आश्चर्यचकित तो हुई पर तुरन्त ही पति की आज्ञा का पालन करने के लिए रसोई में चली गया।

सेठजी अपने बिस्तर पर आसीन हो गये। उन्हें विश्वास था कि आज भी वह चोर जरूर आयेगा।

यथासमय वह चोर आया। सेठजी दबे कदमों से उसके पीछे गये और हाथ पकड़ लिया। चोर बौखला गया। यह क्या?मैं तो इस सेठ को शरीफ समझ रहा था जबकि इसने तो मुझे पकड़ने के लिए चुग्गा डाला था। वह समझ गया, आज खैर नहीं। अवश्य पुलिस वाले लोहे के कंगन पहना देंगे।

उसके जेहन में फाँसी का फन्दा तैरने लगा। मौत की कल्पना शूरवीरों को भी कँपा देती है। वह तो बिचारा इस सृष्टि की सामान्य कृति था।

उसने बचाव का और कोई उपाय नहीं देखकर गिड़गिड़ाना प्रारम्भ कर दिया- सेठजी! मैंने कुछ नहीं चुराया है, आप स्वयं देख लीजिए।

सेठ ने गहरी मुस्कान से उसे देखा और कहा- आज तो तुम्हें उस स्थान पर पहुँचा दूंगा जहाँ तुम कभी चोरी की कल्पना भी नहीं कर सको।

चोर उस मुस्कान और अर्थ की गम्भीरता को नहीं समझ पाया।

सेठ उसे सेठानी के पास ले गये और कहा- तुम प्रतिदिन शिकायत करती हो कि हमारे बेटियाँ हैं इसलिए वंशवेल आगे बढ़ाने के लिये किसी की गोद ले लो। आज मुझे एक लड़का पसन्द आ गया है। अगर तुम्हें प्रसन्नता हो तो इस गोद ले लूं।

सेठानी ने पुलकित होकर कहा- इससे अच्छा क्या होगा?जिसमें आपकी प्रसन्नता उसी में मेरा भी प्रसन्नता है। आप जल्दी ही उसे सामने लाओ जो आपकी आँखों को भा गया है।

सेठ के चेहरे पर सन्तुष्टि के भाव फैल गये। सेठानी के असीम विश्वास और समर्पण के भावों से वे प्रसन्न हो गये। उन्होंने जल्दी से उस चोर युवक को सेठानी के सामने ला खड़ा किया और कहा- संभालो इस बेटे को।

सेठानी उस अजनबी युवक को देखकर चौंक उठी पर अपने पति की पारखी नजरों को वह पहचानती थी। अत: तुरन्त आगे बढ़कर उसे सीने से लगा लिया और कहा- मेरे लाल! आज से मैं तुझे पुत्र रूप में स्वीकार करती हूँ। आज से तूं इस घर का दीपक है। अपनी क्रियाओं और व्यवहार से इस घर की शान बढ़ाना बेटा!

बिचारा वह युवक तो हतप्रभ हो गया। यह कोई सपना है या किसी नाटक का दृश्य। क्या सेठजी वास्तव में पुत्र-रूप में मुझे स्वीकार कर रहे हैं। अथवा मुझे फँसाने का कोई अलग किस्म का जाल तैयार कर रहे हैं।

उसे असमंजस में पड़ा देखकर सेठ ने स्नेहिल स्वर में कहा- बेटा! तुम किस चक्कर में पड़े हो?मैं तुम्हें हृदय के समस्त भावों के साथ पुत्र-रूप में स्वीकार कर रहा हूँ। यह मजाक नहीं है। तुम समस्त विकारों से मुक्त बनकर यहाँ रहो। गोद की रस्म भी कल पूरी कर दूंगा।

युवक उलझन के साथ सेठानी की ओर देखने लगा। सेठानी की आँखों में भी स्नेह और वात्सल्य की ही चमक दिखाई दे रही थी।

युवक उनके निश्छल और स्निग्ध प्रेम के समक्ष झुक गया। सेठानी ने खाना परोसा और जबरन उसे खाना खाने बिठा दिया। युवक ने खाने के पश्चात् पुनः कहा- आप मुझे अगर गोद लेंगे तो पूरी बिरादरी के लोग नाराज हो जायेंगे। आप व्यर्थ ही अपनी बिरादरी से दुश्मनी लेकर मेरा जीवन संवारने का प्रयास कर रहे हैं।

सेठ ने कहा- तुम चिन्ता छोड़ो और जाकर शयनकक्ष में आराम करो। हाँ, भागने का प्रयास मत करना। अगर भागने का प्रयास किया तो निश्चित ही एक बाप के विश्वास को तुम छलनी कर दोगे।

युवक चुपचाप सो गया। प्रातः उसे नाश्ता आदि करवाकर दुकान की चाबी देते हुए कहा- मेरे नौकर के साथ जाकर तुम दुकान खोलो, इतने में मैं आ रहा हूँ।

युवक ने धर्म माता-पिता के पैर छुए और चल दिया। सेठजी भी रवाना हो गये। जाते ही उन्होंने मुनीम से कहा- यह मेरा पुत्र एवं तुम्हारा छोटा मालिक है। तुम तुरन्त ही मुख्य पंचों को बुला लो जिससे मैं घोषणा कर सकूं।

पंच बुलाये गये। उस नामी चोर को जब सेठ के पास बैठे हुए देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा- चोर और साहूकार का कहाँ जोड़?

(क्रमशः)

श्री जिनदत्त कुशल सूरि गुरुभ्यो नमः श्री पार्श्वमणि पार्श्वनाथाय नमः श्री गणनायक सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

अर्हत् चैत्य... अर्हत् बिम्ब श्री नमिनाथ जैन संघ कडप्पा के तत्त्व वावधान में

''अर्हत् चैत्य... अर्हत् बिम्ब'' ग्रंथ का है आयोजन चित्त का प्रमार्जन, चातुर्मास में ज्ञानार्जन...

ऑपन...बुक्स...एग्जाम (घर बैठे) का है नियोजन

OPEN BOOK EXAMINATION

उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अंतिम तारीख 21.9.2014 ● बल्लारी में परिणाम घोषणा : ता. 10.10.2014

दिव्य कृपावृष्टि
परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भंगवत
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म. सा.
परम पूज्य प्रवर्तिनी महोदया श्री प्रेमश्रीजी म. सा.,
परम पूज्या गुरुवर्या श्री तेजश्रीजी म. सा.
पावन प्रेरणा
प.पू. समतामूर्ति श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.सा.
संयोजिका
प.पू. डॉ. प्रियलताश्रीजी म.सा., प.पू. डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म.सा.

आज्ञा व आशीर्वाद प्रदाता
पूज्य आचार्य श्री जिनकैलाशसागरसूरीश्वरजी म. सा.
पूज्य मरूधर मणि उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.
प्रत्यक्षकृपा
परम पूज्या दक्षिण प्रभाविका गणरत्ना पार्श्वमणि तीर्थ
प्रेरिका गुरूवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा.
उग्रतपचंद्रिका प.पू. श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा.

सफल प्रत्याशी को बम्पर पुरस्कार
- प्रथम विजेता : डायमंड 7,000 रु.
- द्वितीय विजेता : गोल्डन 5,000 रु.
- तृतीय विजेता : सिल्वर 3,000 रु.
- चतुर्थ विजेता : प्लेटिनम 2,000 रु.
- पंचम विजेता : टाइटेनियम 1,000 रु.
- बेस्ट 10 मैरिट में आने वाले को 500 रु.
- श्रेष्ठ - सांत्वना पुरस्कार 200 रु.

नोट- अर्हत् चैत्य बुक्स एग्जाम की तारीख 21 सितम्बर 2014 बढ़ा दी गई है।

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री सुपार्श्वजिन स्तवन

श्री सुपास आनंद में,
गुण अनंत नो कंद हो जिनजी।
ज्ञानानंदे पूरणो पवित्र चारित्रानंद हो जिनजी,
श्री सुपास.॥ १॥

श्री सुपार्श्वनाथ स्वयं आनन्दमग्न हैं। अनंतगुणों के वे समूह है। केवलज्ञान की परिपूर्णता के कारण वे आनन्दमय हैं। साथ ही चारित्र का अखंड आनंद भी उन्हें उपलब्ध है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी परमात्मा के अखण्ड आनंद और उस आनंद का कारण स्पष्ट करते हैं। परमात्मा को आनंद के सागर में डुबकी लगाते देखकर श्रद्धावान् भक्त भी वैसा ही आनंद पाना चाहता है। आनंद दो प्रकार का है। एक आनंद ऐसा जिसे पाकर चेतना तृप्त नहीं होती। और सबसे बड़ा दुःख है अतृप्ति! परन्तु एक आनंद ऐसा भी है कि जिसे पाने के बाद कुछ और पाने की चाहत ही समाप्त हो जाती है। ऐसा आनंद जिसमें किसी भी प्रकार की रूकावट नहीं आ सकती। सुख की निरंतरता! मात्र सुख! मात्र आनंद! ऐसा सुख किसी भी पर पदार्थ के कारण नहीं मिल सकता। क्योंकि पर पदार्थ से मिलने वाला आनंद सापेक्ष है जब तक वह वस्तु या व्यक्ति मौजुद है तभी तक वह आनंद रहेगा और जैसे ही उस वस्तु या व्यक्ति का वियोग होगा कि तुरंत सुख, दुःख में परिणत हो जायेगा।

निरपेक्ष आनंद ही वास्तविक आनंद हो सकता है। क्योंकि उसमें किसी अन्य की उपस्थिति नहीं होती। ऐसा आनंद तब मिलता है जब चेतना अपने आप में प्रतिबिंबित हो जाती है। तब मानव स्थूल चेतना से हटकर सूक्ष्म चेतना को देखना प्रारम्भ कर देता है। ऐसे में भीतर का आनंद स्पष्ट दिखने लग जाता है। इस स्थिति में बाहरी पदार्थों का आगमन स्वतः रूक जाता है। हमारी चेतना सर्वथा निरालंब भौतिक अपेक्षा से हो जाती है। मात्र चैतन्य का अनुभव! इसी का नाम है आत्मानुभव! यही केवलज्ञान है।

परमात्मा केवलज्ञान को पाकर ही आनंदमग्न बने है। ऐसे अखंड आनंद की साधना ही श्रीमद् सहित साधकों का लक्ष्य है। यद्यपि जब तक इसे समझने का प्रयत्न नहीं करेंगे, तब तक इसकी साधना कठिन लगेगी पर वास्तव में यह कठिन नहीं है। इस साधना में न शरीर सुखाना है, न कठोर तप करना है, इस तरंगों को समाप्त करना है। जब तरंगें समाप्त हो जाती हैं तब स्वतः ही समाधि उपलब्ध हो जाती है और यही समाधि चारित्र रूप बन जाती है। ज्यों-ज्यों साधना तीव्र बनती है त्यों-त्यों जागरूकता बढ़ती है और ऐसे में साधक को केवलज्ञान की भूमिका प्राप्त करने में कठिनाई नहीं होती।

संरक्षण विण नाथ छो,
द्रव्य विना धनवंत हो जिनजी।
कर्तापद किरिया विना,
संत अजेय अनंत हो जिनजी॥ २॥

हे प्रभु! आप किसी का संरक्षण नहीं करते फिर भी सारे संसार के नाथ है। आपके पास धन संपदा नहीं है फिर भी परम धनवंत है। गमनागमन की क्रिया से रहित होने पर भी कर्त्ता है। संत है क्योंकि प्राणीमात्र का कल्याण चाहते हैं। कोई

भी आपको हरा नहीं सकता। अत: अजेय है। आपका अंत नहीं है, अत: अनंत है।

श्रीमद्जी इस पद्य में परमात्मा की शक्तियों का विवेचन करते हैं। परमात्मा व्यक्तिगत अथवा पूर्वाग्रह से किसी को अपना शरण नहीं देते क्योंकि परमात्मा अगर ऐसा करें तो इसमें राग और द्वेष की भावनाओं का संकेत मिलता है। परमात्मा तो सामूहिक दृष्टि से सभी के रक्षक है। परमात्मा की विशिष्टता का यही कारण है। एक को शरण देना अर्थात् सभी से स्वयं को अलग करना। एक की रक्षा करना और अन्यों के प्रति उदासीन होना उनकी वीतरागता में बाधक बनता है। अत: परमात्मा सभी के संरक्षक है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश प्राणीमात्र के लिये है वैसे ही परमात्मा लक्ष्य पूर्वक शरण देते नहीं परन्तु जो मानव अपने मकान के झरोखे आदि खोलकर रखता है तो प्रकाश स्वत: ही उसके घर में प्रविष्ट हो जाता है। वैसे ही जो भक्त अपने हृदय को खोलकर रखता है तो स्वत: ही परमात्मा की करूणा को अपने अंतर में समाविष्ट कर लेता है। इसी कारण प्रभु सभी के स्वामी है। भौतिक दृष्टि से परमात्मा अकिंचन है। पर आत्म संपदा की अपूर्व और अद्भुत लक्ष्मी प्रतिपल उनके साथ है।

केवलज्ञान और केवलदर्शन जैसी अपूर्व लक्ष्मी और कोई हो नहीं सकती क्योंकि यह एक बार प्रकट हो जाय तो फिर कभी भी वियोग नहीं होता। इस संपदा के समक्ष चक्रवर्ती और इन्द्र भी परमात्मा के चरणों में सेवक की तरह रहते हैं। व्यावहारिक क्रिया जैसे आना, जाना, खाना, पीना, बोलना आदि समस्त क्रियाओं का सिद्धों में अभाव है। फिर भी आत्मा के ज्ञान दर्शन में रमणता, परिणमन आदि के कारण वे कर्त्ता है। आप संत इस अपेक्षा से कि आपने अभव्य जीव जिनका मोक्ष नहीं हो सकता उनका भी कल्याण और शुभ चाहा है। आप सदैव प्राणी मात्र के हितचिंतक ही रहे हैं।

शत्रु दो प्रकार के होते हैं। एक व्यावहारिक और दूसरे अंतरंग! व्यावहारिक शत्रु व्यक्ति विशेष होते हैं। अत: उन्हें हराने में मात्र शक्ति ही चाहिये परन्तु अंतरंग शत्रु जिन्हें राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ कहते हैं उन्हें हराने में प्रचंड पुरुषार्थ चाहिये। प्रखर पराक्रम ही इन भावात्मक शत्रुओं को परास्त करने का काम कर सकता है। परमात्मा ने अपनी उग्र साधना द्वारा उन्हें जीत लिया अत: वे अजेय है। सिद्धत्व की प्राप्ति के बाद अंत अर्थात् मृत्यु नहीं होती अत: अनंत है। जन्म और मृत्यु राग द्वेष के कारण है। परमात्मा राग द्वेष दोनों का जड़ से विनाश कर चुके अत: जन्म और मृत्यु संभव ही नहीं है।

अगर अगोचर अमर तूं,
अन्वय रिद्धि समूह हो जिनजी।
वर्ण गंध रस फरस विणु,
निज भोक्ता गुण व्यूह हो जिनजी।। ३।।

हे प्रभु! आप अगम्य, अगोचर और अमर है। अन्वय ऋद्धि के समूह है। वर्ण, गंध रस और स्पर्श के बिना भी अपने गुण समूह के भोक्ता है।

यहाँ श्रीमद्जी परमात्मा के आंतरिक वैभव का विवेचन करते है कि जिस समाधि को परमात्मा उपलब्ध हुए हैं उसका कितना भी विवेचन करना चाहे पर संभव नहीं है क्योंकि शब्दों की सीमा है और परमात्मा का सुख असीम है। सूर्य के सुनहरे प्रकाश का अंधे के समक्ष कितना ही विवेचन करके समझाओ पर उसे नहीं समझाया जा सकता। गुड की मिठास तो खाने से ही आती है न कि विवेचन करने से। उनका आनंद, उनका स्वरूप, उनकी अजरामर स्थिति सब कुछ अद्भुत है। आत्मा के ज्ञान, दर्शन, चारित्र और वीर्यादिक गुण को अन्वयी और कषायादि दोषों के नाश से उत्पन्न वीतरागता, करूणा आदि को व्यतिरेक गुण कहते हैं। परमात्मा आत्मसत्ता के भोक्ता है। यद्यपि सिद्धपद में वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श के पुद्गलों का सर्वथा अभाव है।

इस पद्य में श्रीमद्जी ने भगवंत को भोक्ता पुद्गलों का भोगी है और एक भोक्ता वह जो आत्मगुणों का भोगी है। परमात्मा मात्र स्व के भोक्ता है।

(क्रमश:)

चातुर्मास

तीन सवाल

श्री मनितप्रभसागर जी म.सा.

गतांक में हमने पढ़ा कि चातुर्मास क्या है?

इस बार हमें दूसरे प्रश्न पर चिन्तन करना है कि चातुर्मास का महत्त्व क्यों है?

चातुर्मास का काल साधना का काल है। जिस प्रकार मेघराज के आगमन से प्रकृति आनंदविभोर हो उठती है, वैसे ही गुरु महाराज के आने से भव्यात्माएं आत्मिक प्रसन्नता से भर जाती है।

मेघ बरसता है तो पृथ्वी हरी-भरी हो जाती है, वैसे ही गुरु, मुनि अमृतमयी जिनवाणी फरमाते है तो आत्मा की सूखी भूमि पर तप, त्याग और वैराग्य के फूल खिल उठते हैं।

वर्षाकाल वातावरण की उष्मा, तप और थकान को सौंख लेता है, वैसे ही वर्षावास मन की संवेदनहीनता क्रोध के तप और भवभ्रमण की थकान को हरने का काम करता है।

पर्वों का भूषण : चातुर्मास

समुचित काल में वपन किया गया बीज हजारों-लाखों बीजों में परिवर्तित होकर लौटता है वैसे ही चातुर्मास के दौरान की गयी धर्मसाधना भी विशिष्ट फलदायी बनती है।

चातुर्मास के दिन प्रभावशाली होते है। इन दिनों में की गयी छोटी विराधना की महापाप का बंध करवाती है, वैसे ही तप-जप की छोटी उपासना पुण्यानुबंधी पुण्य का ही अर्जन नहीं करवाती अपितु अष्ट कर्म के पाश को तोड़कर सर्वोच्च सत्ता भी हासिल करवाती है।

सबसे बड़ा पर्व:- शास्त्रों में जो विविध पर्व उल्लिखित हैं उनमें चातुर्मास सर्वोत्तम पर्व है।

आप पूछेंगे कि ऐसा क्यों?

तो इस प्रश्न का प्रत्युत्तर होगा कि चातुर्मास सबसे दीर्घ अवधि वाला पर्व है।

नवपद की ओली का पर्व नौ दिनों का होता है, पर्युषण पर्व आठ दिन चलता है, ज्ञान पंचमी, एकादशी आदि पर्व मात्र एक-एक दिन के ही होते हैं जबकि चातुर्मास रूपी पर्व पूरे चार महिनों तक धर्म की गंगा बहाता है हुआ जीवन की भूमि को सरसब्ज, हरा भरा और शीतल बनाता है।

इसका प्रारम्भ होगा आषाढ़ वदि चतुर्दशी को चातुर्मासिक प्रतिक्रमण से और समापन होगा कार्तिक सुदि चतुर्दशी को चातुर्मासिक प्रतिक्रमण के साथ।

इसका सर्वाधिक महत्व कहने का एक दूसरा पहलु भी है। किसी एक पर्व में एक या दो पर्व मनाये जाते है जैसे पर्युषण में दो पर्व, पहला पर्युषण, दूसरा संवत्सरी। ज्ञान पंचमी आदि को एक ही पर्व होता है परन्तु चातुर्मास नामक पर्व अनेक पर्वों को अपने में समाविष्ट करके उपस्थित होता है जैसे चातुर्मासिक चतुर्दशी, पर्युषण, संवत्सरी, नवपद ओली, महावीर निर्वाण कल्याणक, गणधर गौतम केवलज्ञान दिवस, नूतन वर्षारंभ, ज्ञान पंचमी आदि।

अवशिष्ट कुछ नहीं- यद्यपि चातुर्मास के अतिरिक्त भी अनेक पर्व आते हैं परन्तु इसकी हौड़ करने वाला दूसरा पर्व नहीं।

एक मास्टर ने छात्र से पूछा-बारह में से चार गये-पीछे कितने रहे?

छात्र ने कहा- एक भी नहीं।

अध्यापक ने कहा- ऐसा कैसे?

छात्र बोला- अध्यापक महोदय! मैं एक किसान का पुत्र हूँ। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि वर्षाकाल के चार महीने यदि बरसात नहीं हुई तो समझो कि बारह ही महीने बेकार हुए। यदि चार महीने मेघराज मेहरबान रहे तो हमारे बारह महीने आबाद हुए।

इसी प्रकार चार महीने की इस महत्वपूर्ण अवधि में

जप-तप, ज्ञान-ध्यान आदि द्वारा आत्म-धन उपलब्ध करने वाले का पूरा वर्ष समृद्धिमय बन जाता है। जो ऐसा नहीं करता, वह वर्षभर दरिद्रता और दीनता का सामना करता है।

चार महीने के समाचार

- गुरुजनों का विहार प्रतिबंधित हो जायेगा। वे एक स्थान पर रहते हुए आत्मकल्याण के साथ-साथ परकल्याण में प्रवृत्त होंगे।
- उपाश्रयों में प्रवचन की पावन सरिता बहेगी। जन जन के अन्तर्मन का कालुष्य धूल जायेगा। उपाश्रय छोटे पड़ेंगे।
- तप का सूर्य पूर्ण प्रखरता के साथ तपेगा। आत्मा की अंधेरी गलियां आलोकित हो उठेगी।
- स्वाध्याय की कलियाँ खिल उठेगी। वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुपेक्षा और धर्मकथा के द्वारा जीवन की दिशा और दशा सुवासित हो उठेगी।
- आल्मारी में बंद पड़े सामायिक उपकरण बाहर आ जायेंगे। समभाव और सद्भाव के द्वारा आत्माभिनंदी भव्य जीव परभाव से स्वभाव की और अभिमुख होंगे।
- फैशन से मन हटेगा, दुकान की टेंशन से दूर होगा, लोग व्यसन को बाय-बाय कहेंगे।
- अभक्ष्य भोजन, रात्रिभोजन, कंदमूल भक्षण का परित्याग होने से पाप का सूचकांक नीचे गिरेगा। उपवास आदि तपों से कर्म निर्जरा का ग्राफ ऊपर उठेगा।
- मंदिरों में पूजन-दर्शन करने वालों की भीड़ लगेगी।
- शिविरों में बालकों और युवकों को जीवन जीने की कला का निर्देशन एवं प्रशिक्षण मिलेगा।
- कषाय की आय घटेगी। क्रोध, मान, माया और लोभ से दूरियां बढ़ेगी।
- टेलीविजन, मोबाईल, इटरनेट के जैन भक्त कुछ प्रतिशत में कम होंगे। आराधना के चलते वे टी.वी. आदि को पूरा समय नहीं दे पायेंगे। (क्रमशः)

सुरत प्रतिष्ठा की झलकियाँ

आयोजक
श्रीमती जम्मुबाई
रिखबचन्दजी
गुलेच्छा परिवार
मोकलसर-सुरत

मांगीलाल मालू
093747 13889,
081288 20000

शा. मांगीलाल-विमला

जितेन्द्र मालू
093759 60465,
081288 30000

जितेन्द्र-सीमा,

मनीष-ज्योति, कपिल-मंजू,

पौत्र : रजत, प्रशांत

बेटा-पोता आसुलालजी गोपचन्दजी मालू,

चौहटन-बाड़मेर-सुरत

Firm

RAMDEV CORPORATION

H - 2550, R.K.P.M., Ring Road
SURAT (GUJ.)
Phone : (0261) 2322025, 2352025

21
श्रमण चिंतन

श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.

चारित्र रत्नान्न परं हि रत्नम् !

गतांक से आगे...

दशवैकालिक सूत्र की यह प्रथम चूलिका चूडामणि रत्न के समान है।

- जो साधु गंगा के निर्मल नीर को छोड़कर गटर के गंदे पानी से प्यास बुझाना चाहता है...
- जो अमृत-कुंभ का त्याग कर जहर के द्वारा दीर्घायु की कामना कर रहा है...
- जो पुष्पों की मनमोहक सुवास का परित्याग करके कांटों के कठोर स्पर्श से शांति की याचना करता है, उससे बड़ा नादान और अबोध और कौन होगा ?

चारित्र-रत्न की महिमा में यदि तीर्थंकर परमात्मा परमात्मा हजारों नहीं, लाखों नहीं, करोड़ों नहीं, अरबों-खरबों वर्षों तक एक नहीं, सौ नहीं, हजार नहीं, लाख-लाख जिह्वा से गुणोत्कीर्तन करे तब भी इसका संपूर्ण प्रशस्ति गान करने में समर्थ नहीं है।

यदि कोई विद्वान परमेश्वरी प्रव्रज्या पर लाखों पृष्ठ वाली लाखों पुस्तकों का आलेखन करे तो भी सकल कीर्ति का लेखन संभव नहीं होगा।

मुनि तूं समझ रहा है न कि चारित्र का यह रत्न कितना महंगा... कितना अनमोल कि इसके सम्मुख संसार की सारी ऋद्धियाँ, इन्द्र की सारी उपलब्धियाँ, चक्रवर्ती की समस्त लब्धियां बोनी दिखती है।

इसीलिये तो शास्त्रकार छोटी-सी पंक्ति में संयम रूपी चिन्तामणि का महत्त्व कहते हैं-

चारित्र-रत्नान्न पर हि रत्नं,
चारित्र-वित्तान्न पर हि वित्तम्।
चारित्र लाभान्न परो हि लाभ,
चारित्र-योगान्न परो हि योगः॥

चारित्र रत्न से श्रेष्ठ दूसरा रत्न नहीं।
चारित्र धन से श्रेष्ठ दूसरा धन नहीं।
चारित्र लाभ से श्रेष्ठ दूसरा लाभ नहीं।
चारित्र योग से श्रेष्ठ दूसरा योग नहीं।

यह समस्त रत्नों में महारत्न है क्योंकि भौतिक रत्न भौतिक संपदा ही देते है परन्तु यह संयम रत्न शाश्वत संपदा देता है। इसका महत्त्व बड़ा और खरा है तभी तो पुण्डरीक और कण्डरीक, दोनों भाईओं में इस बात पर विवाद होता है कि दीक्षा में लेता हूँ और तूं राजा बनकर ऐशो-आराम करे।

दीक्षा सारे धन में महान् है क्योंकि इस धन को कोई चुरा नहीं सकता, छीन नहीं सकता, लूट नहीं सकता। इसी कारण जम्बू स्वामी आदि बाह्य ऐश्वर्य, धन-सम्पदा को छोड़कर चारित्र धन हेतु प्रयत्नशील बनते है।

मुनिवर। तूं सच मान! इससे बड़ा लाभ इस जगत में दूसरा नहीं। प्रतिदिन करोड़ों का लाभ पाने वाला भी जीवन भर दास बना रहता है पर जो सम्यक् चारित्र का श्रेष्ठतम लाभ प्राप्त करता है, वह सर्वोत्कृष्ट मोक्ष एवं केवलज्ञान रूपी महानता को प्राप्त करता है। तभी तो धन्ना अणगार, नंदीषेण

With best compliments from ASHOK M. BHANSALI

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

संसार को त्यागकर प्रव्रज्याभिमुख होते है।

सारे योग-संयोग! प्रबल भाग्ययोग। नृप बनने के योग। इनसे भी बड़ा योग है- अणगार पद प्राप्ति का योग! तभी तो अर्हत् राजवैभव को ठोकर मारकर शुद्ध-आत्मयोग के प्रति यत्नवान बनते है।

देख! दशवैकालिक सूत्र की प्रथमाचूलिका का दूसरा सूत्र- **संकप्पे से वहाय होइ।**

मुनि! इतना समझाने पर भी तूं समझता क्यों नहीं कि संयम के सामने सारे यम परास्त हो जाते है।

तूं संयम त्यागी बनकर गृहस्थ बनेगा पर क्या इससे तेरी किस्मत संवर जायेगी?

वहाँ सारे संकल्प वध के लिये होते है। और इन संकल्पों के परिणाम स्वरूप तेरा यह भव क्या सुधरेगा, अपितु इस मन के साथ-साथ हजारों परभव भी बिगड़ जायेंगे।

तूं क्यों नहीं सोचता है कि वहाँ शिशु अंधा, बहरा, काना, लूला, इन्द्रियहीन आदि विविध रोगों के साथ जन्म लेता है। वहां बचपन शाता में बीतता है तो जवानी में भयानक आतंक, रोग आकर हैरान-परेशान कर देते है। बुढ़ापे का तो हाल ही न पूछो। न तो कोई सेवा करने वाला होता है, न दवा देने वाला। मन ही मन आर्तध्यान करते रहो- हे! भगवान! मुझे तूं उठा ले। ऐसा जीवन जीने से तो मर जाना ही अच्छा है। क्या ऐसे दिन देखने के लिये ही संतान को पाला-पोसा था। इन्हीं विचारों में असमाधिमरण जीवन के भंवरजाल में गोते लगा रही नाव को जल-शरण कर देता है। आत्महत्या के भाव समाधि और चित्त की प्रसन्नता के टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं।

ऐसी भयानक परिस्थिति तूं ही बता मुनि! क्या गृहस्थ बनना बुद्धिमता की निशानी है। वही साधु! नहीं, इससे तो तेरे कषाय, जन्म-मरण, रोग, मिथ्यात्व बढेंगे।

दो राजकुमार, शशिप्रभ और सोमप्रभ!

सोमप्रभ को गुरुजनों के सानिध्य में आत्म-तत्त्व का बोध मिला। उसने बड़े भाई के सामने दीक्षा की भावना के साथ साथ उसे भी दीक्षित होने की प्रेरणा की।

बड़ा भाई विषयों में आसक्त। राजवैभव में मोहाधीन। उससे संसार नहीं छूटा।

बड़ा भाई खरा रागी और छोटा भाई बड़ा त्यागी।

एक ही दिन दोनों का आयु बल समाप्त हुआ! सोमप्रभ मुनिपद की साधना करके पंचम देवलोक में गया!

शशिप्रभ संसार में डूबकर तीसरी नरक में गया। सोमप्रभ ने अवधिज्ञान से जाना कि मेरे ज्येष्ठ भ्राता नरक में गये है।

तुरन्त वह तीसरी नरक में पहुंचा।

अपने भाई को पूर्वभव का बोध करवाते हुए कहा- भैया आपने मेरा कहा नहीं माना। जिनोक्त वेश के कारण ही मुझे विपुल संपदा, महा ऋद्धि, सुन्दर शरीर, विशेष अनुकूलता प्राप्त हुई। यदि आपने मेरा कहा माना होता तो आज इस प्रकार की वेदनाओं के आतंक में जीना नहीं पड़ता। शशिप्रभ को अपने अपकृत्य के प्रति घोर पश्चाताप मिश्रित पीड़ा का अनुभव हुआ पर अब क्या हो सकता था। उसने अपने देव बंधु से नरक-मुक्ति की प्रार्थना की।

क्या आग में फूल खिल सकता है या आकाश में जहाज तैर सकता है।

अब तो परमाधामीकृत वेदनाओं को भोगे बिना छुटकारा नहीं था।

इसलिये वत्स! मेरी बात को मान! जब तेरे हाथ में परम रत्न आ ही गया तो मत गंवा।

हाँ! भले ही तुझसे उत्तम चारित्र धर्म की आराधना शक्य न हो।

- तुझसे धन्ना अणगार, ढंढण अणगार जैसा कठोर तप न हो पर छोटे एकासन, बियासन आदि तप हो तो ही सकते है।
- ज्ञानाराधना में भले ही तुम भद्रबाहु स्वामी, हरिभद्रसूरि, नवांगी वृत्तिकार अभयदेवसूरी, जिनवल्लभसूरि, हेमचन्द्राचार्य की होड न कर सको परन्तु मध्यम स्तरीय ज्ञान साधना करके अपनी आत्मा को पवित्र कर ही सकते हो।

- नंदीषेण मुनि, बाहु-सुबाहु मुनि जैसी उत्कृष्ट वेयावच्च संभव न हो परन्तु सामान्य सेवा करके भी यहीं रहो।
- मर्पण में मासतुष मुनि, सम्यक्दर्शन में सुलसा श्राविका, ब्रह्मचर्य में आर्यश्रेष्ठ स्थूलिभद्र, विनय में गौतम स्वामी, ध्यान में प्रसन्नचन्द्र मुनि, लेखन में समयसुंदरो- पाध्याय, योग साधना में आनंदघन, प्रतिबोध में जिनदत्त- कुशल सूरि जैसे भले ही न बन पाओ, कोई चिन्ता की बात नहीं क्योंकि यह सब ज्ञान-दर्शन- चारित्र के क्षयोपशम पर निर्भर है परन्तु हो सके उतनी, आत्मा की साधना, संयम की उपासना और जिनाज्ञा की आराधना करके भी साधु वेश में ही रहो।

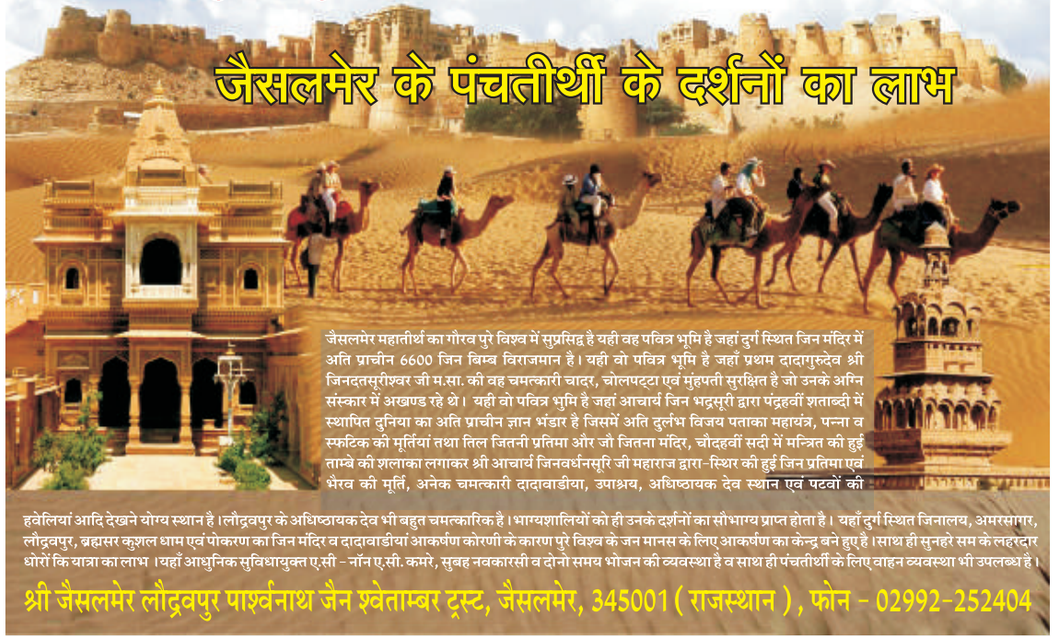

यह एक बार छूट गया तो भवोभव हाथ नहीं लगेगा। समुद्र की अगाध-अथाह जल राशि में गिरा हीरा क्या हाथ लग सकता है?

नहीं।

किसी देव सहाय आदि से कदाच उस रत्न की पुन: प्राप्ति हो जाये पर संयम का रत्न एक बार भव-गर्त में गिरने के बाद हाथ मलते रहोगे।

रोओगे, चीखोगे, चिल्लाओगे पर कुछ भी हाथ नहीं लगेगा।

मुझे तो बस! तेरी आत्मा की चिन्ता है!

अचिन्त्य फल देने वाला संयम-चिन्तामणि पाकर भी तूं कंकर में आसक्त क्यों बन रहा है?

जीवन का कल्पतरू पाकर भी तूं बबूल के नीचे क्यों तप रहा है?

अपना हठाग्रह क्यों नहीं छोड़ रहा, यह तो मेरे समझ के बाहर की बात है।

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

28 संस्मरण

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. का जीवन अध्यात्म-वातावरण से जितना ओतप्रोत था, व्यावहारिक चिंतन भी उनका उतना ही महत्वपूर्ण होता था।

वे अपने व्यवहार, प्रवचन के द्वारा जोडने का कार्य करते थे। वे जहाँ भी जाते, वहाँ संघ-ऐक्यता के वातावरण का निर्माण करते।

पूज्यश्री पावापुरी का चातुर्मास संपन्न कर... 25वीं निर्वाण शताब्दी के विराट् आयोजन के पश्चात् विहार कर बाडमेर की ओर पधार रहे थे। बाडमेर एक विशेष लक्ष्य को लेकर पधार रहे थे। आगामी चातुर्मास पालीताना था। उससे पूर्व फलोधी में बडी दीक्षाओं का कार्यक्रम था। अधिक समय न था।

बाडमेर में कुछ कारणवश संघ में मनमुटाव चल रहा था। तेरापंथ समाज में चल रही गुरू धारणा के नियम के कारण कुछ समस्याऐं उपस्थित हुई थी। बाडमेर, चौहटन, बायतू आदि क्षेत्रों में परस्पर रत्न व्यवहार चलता है। बाडमेर, चौहटन संपूर्ण मंदिरमार्गी क्षेत्र है, बायतू तेरापंथ का।

मंदिरमार्गी परिवार की कन्याओं का विवाह यदि तेरापंथ परिवार में होता तो उन्हें तेरापंथी होना अनिवार्य होता था। यह स्वाभाविक भी था। कन्याऐं हमेशा श्वसुर-पक्ष का धर्म स्वीकार करती आई हैं। पर जब तेरापंथी परिवार की कन्याऐं मंदिरमार्गी परिवार में विवाहित होती तो उन कन्याओं का कथन होता कि मैंने तो गुरू धारणा की हुई है सो मैं तो मंदिरमार्गी नहीं बनूंगी।

धीरे धीरे इस विषय ने विस्फोट का रूप धारण कर लिया। मंदिरमार्गी समाज समझने लगा कि यह तो अत्यन्त अनुचित बात है। दोनों तरफ हमें नुकसान है। जो कन्या उनके घरों में जायेगी, वह तेरापंथी हो, कोई एतराज नहीं, पर आने वाली कन्या को तो हमारी परम्पराऐं स्वीकार करनी ही होगी। इसमें बाधा गुरूधारणा की है। इसलिये गुरूधारणा बंद की जानी चाहिये।

जब बंद नहीं हुई तो मंदिरमार्गी समाज ने एकत्र होकर तेरापंथी परिवारों के साथ रत्न व्यवहार बंद कर दिया। और केवल रत्न व्यवहार ही बंद नहीं किया गया था, अपितु पारस्परिक तमाम प्रकार का खाने पीने का व्यवहार भी निषिद्ध किया गया था। परिणाम यह हुआ कि कोई बहु अपने पीहर जाती तो पानी ससुराल से साथ लेकर जाती। पीहर का पानी नहीं पी सकती थी। इस प्रस्ताव के परिणाम स्वरूप समाज में खलबली मच गई। बहुत सारे संबंध छूटने लगे। समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया था।

पूज्य गुरुदेवश्री बाडमेर पधारे। हजारों भक्तों की भीड! पूज्यश्री ने ऐलान किया- मैं यहाँ केवल एक दिन के लिये आया हूँ। कल प्रात: 9 बजे मेरा विहार होगा। आज मेरे उपवास है। मैं चाहता हूँ। अब सामाजिक एकता स्थापित हो जानी चाहिये। समस्त पारस्परिक व्यवहार जो बंद किये गये हैं, उन्हें समाप्त किये जाने चाहिये।

आपने यदि मेरी बात मानली तो मैं पारणा करके विहार करूँगा। अन्यथा ऐसे ही विहार होगा।

रात भर संघ की मीटींग चली। आखिर प्रात: 4 बजे सर्वसम्मति से पूज्यश्री के आदेश के अनुरूप संघ में एकता की घोषणा की गई। संघ में परम प्रसन्नता का वातावरण छा गया।

आखिर बाडमेर का श्री संघ अपने उपकारी और परम प्रिय गुरुदेव को बिना पारणा किये कैसे विहार करा सकता था!

कुशल कान्ति संस्कार वाटिका-भिवंडी

भिवंडी में प. पू. प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म.सा. के सुशिष्य प.पू. सरलहृदयी श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. के आशीर्वाद से एवं प. पू. पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका सुलोचनाश्रीजी म.सा. प. पू. सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या प.पू. डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से **कुशल कान्ति संस्कार वाटिका** (पाठशाला) का शुभारम्भ रविवार ता. 16.06.14 को हुआ।

साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

मधुर संस्मरण

मेरे बारे में मेरी अनुभूति

सिवाना गाँव में परम तपस्वी व्रतधारी आत्मा श्री कुमारपाल भाई के आगमन से मेरे जिज्ञासु मन को बहुत सारे अनुभव प्राप्त हुए। यदि शहर होता तो शहरी व्यस्तता मुझे भी इतना फ्री नहीं रखती और न कुमारपाल भाई फ्री होते। पर गाँव का शांत वातावरण मेरे लिये बहुत उपकारक हुआ।

मैं उनके व्यक्तिगत संस्मरण सुनती थी। वे संस्मरण मुझे अहोभाव से भरते थे। युवा होती जिन्दगी.. आकर्षक देह सौष्ठव... पवित्र ऊर्जा से परिपूर्ण आभावलय हजारों-हजारों लोग उन जैसे संवेदनशील व्यक्तित्व से जुड़कर धन्यता का अनुभव कर रहे थे। पर वे इन सबसे असम्पृक्त रहते हुए मात्र आत्मलीन थे।

आज उनके सफल निर्देशन में जिनशासन का ऐसा कोई कार्य नहीं है, जो नहीं हो रहा है। जिनशासन में समस्त सुकृत को सात भागों में विभक्त किया गया है। जिनमंदिर, जिनबिंब का निर्माण, जिनागम की भक्ति, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका की वैयावच्च! इन सातों ही क्षेत्रों में कुमारपाल भाई का योगदान अद्‌भुत है। आज तक कई मंदिरों के जीर्णोद्धार, नवनिर्माण एवं आराधना भवन के निर्माण उनकी प्रेरणा से हुए हैं। इस बात से गहरा अचरज होता है कि जहाँ संसार से निस्पृह साधु-संत भी नाम के प्रति आग्रह रखते हैं, वहीं कुमारपाल भाई नाम नहीं लगाने का आग्रह रखते हैं। इतना ही नहीं, अगर उन्हें पता चल जाय कि किसी समारोह की पत्रिका में उनका नाम आ रहा है तो वे वहाँ जाना ही केन्सल कर देते हैं।

जिनशासन में भव्य अनुदान है उनका। अगर वे चाहते तो आज तक अनेक तख्तियाँ उनके नाम की लग सकती थी। फिर भी अपने गुरुभगवंत का नाम देखकर ही जैसे उन्हें तृप्ति हो जाती है। वैसे यह भी सत्य है कि अगर वे अपना नाम उस तख्ती से जोड़ लेते तो उनमें और आम व्यक्ति में अंतर ही क्या रहता?

दुष्काल हो या भूकंप, बाढ़ हो या अन्य कोई प्राकृतिक आपदा... वे पलभर की देरी किये बिना उस स्थान पर पहुँच जाते हैं। और अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखने की अपेक्षा स्थानीय लोगों का भरपूर सम्मान, उनके दिये सुझावों को स्वीकार करते हुए चुपचाप सेवा कार्य करते रहते हैं।

उनके सहयोगी बताते हैं कि जिस समय ये किसी कार्य में जुड़ते हैं, उस समय अपना खाना-पीना, आराम सब कुछ जैसे भूलकर मात्र सेवा यज्ञ में अपने आप को होम देते हैं।

हमने पढ़ा बहुत बार है, 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' समस्त चेतना जगत को स्वयं जैसा समझो। जैसा आप अपने साथ आचरण करते हो, वही व्यवहार अन्य के साथ करो। यह सूत्र सुनने-पढ़ने में बहुत अच्छा लगता है पर जीवन में इसका परिपालन होना दुर्लभ है परन्तु विशिष्ट आत्मा यह कर सकती है।

श्री कुमारपाल भाई विशिष्ट आत्मा है। उनकी यह विशिष्टता उनके शब्दों से नहीं बल्कि आचरण से व्यक्त होती है।

ऐसे तो अनेक व्यक्ति है, जो एक क्षेत्र को अपना जीवन समर्पित कर देते हैं पर सभी क्षेत्रों में समान रूप से समर्पित रहना श्री कुमारपाल भाई जैसी विरल आत्मा के लिये ही संभव है। वे जितनी गहराई से प्रभुभक्ति करते हैं, उतने ही सम्मान के साथ साधु-साध्वी भगवंतों के प्रति विनम्र है। उनकी गुरुभक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है पालीताणा तीर्थ में चल रहा वर्धमान वैयावच्च खाता।

आज से दो दशक से भी अधिक पूर्व में पालीताणा तीर्थ में साधु-साध्वी भगवंतों को विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। न आवश्यक उपकरण की उपलब्धता थी और न चिकित्सा व्यवस्था। कुमारपाल भाई की निगाहों ने इस आवश्यकता को महसूस किया और उन्होंने तुरंत ही आयंबिल खाता में अपना सेवाभावी स्टाफ नियुक्त करते हुए इसकी पूरी व्यवस्था की। आज उस वैयावच्च खाते की यह स्थिति है कि साधु-साध्वी भगवंतों को जो उपकरण या सामग्री कहीं नहीं मिलती, वह वहाँ आसानी से उपलब्ध है।

जब भी आवश्यकता होती है, साधु-साध्वी भगवंत आयंबिल खाते में पधारते हैं और तुरंत ही स्थानीय कर्मचारी अत्यंत भक्तिभाव से उनकी सेवा में प्रस्तुत हो जाता है।

एकाध बार हँसते हुए मैंने कहा- सर! आपने इतनी अच्छी से अच्छी सामग्री यहाँ एकत्र की है कि एक बार आवश्यकता न होने पर भी निगाहें वहाँ अटक ही जाती है। आपने अपने लिये तो पुण्य भण्डार भरने का उपक्रम किया है पर हमारी तो आसक्ति एवं परिग्रह बढ़ाने वाली क्रिया होने से अच्छा नहीं है न?

उन्होंने संवेदना से भरकर कहा- नहीं....नहीं। ऐसा नहीं है। आज सभी साधु महात्मा विरक्त भावों से यहाँ तक पहुँचे हैं। बिना आवश्यकता के एक सुई जितना भी आप नहीं ले सकते।

जब परमात्मा के समक्ष वे होते हैं तो उनकी आँखों में से विरह और मिलन के आँसू एक साथ ही छलक पड़ते हैं। उनकी आँखों से छलकता प्रेम और भक्ति दूसरों को भी गद्‌गद् किये बिना नहीं रहती।

जहाज मंदिर की प्रतिष्ठा अभी हुई नहीं थी। अभी उपधान तप की आराधना गतिशील थी। अचानक सुबह श्री कुमारपाल भाई गाड़ी से उतरे। ऐसा लगा, जैसे शीतल-सुगन्धित बयार आ गयी। पूजा के वस्त्र पहनकर वे सीधे मंदिर पहुंच गये। उन्होंने परमात्मा की पूजा तो की ही, पर प्रक्षाल से लेकर अंगलूंछणे धोने तक का सारा कार्य अपने हाथों से सम्पन्न किया।

पूजारी और अन्य दर्शक उन्हें रोकते रहे पर जब तक सारा कार्य सम्पन्न नहीं हुआ, वे बाहर नहीं पधारे।

स्वधर्मी भक्ति में आज तक उनके हाथों सैकड़ों नहीं हजारों-हजारों लोग लाभान्वित हुए हैं। ऐसा नहीं कि वे उन्हें प्रति माह सहयोग कराते हैं। उनकी नीति यह है कि वे आत्मनिर्भर बनें। इसके लिये वे उन्हें एक मुश्त अच्छी राशि देते हैं ताकि वह अपना व्यापार कर सम्मान के साथ आगे बढ़े।

स्वधर्मी भक्ति भी उनकी देखने जैसी होती है। ऐसा नहीं कि वे किसी को बुलाकर उसे सहयोग प्रदान करते हुए जैसे उस पर उपकार करते हैं। वे स्वयं पूरी जानकारी एकत्र कर उसके घर जाते हैं। अत्यंत विनय एवं बहुमानपूर्वक उसके स्वाभिमान की रक्षा करते हुए उसे सहयोग प्रदान करते हैं।

उनका अपना इस संबंध में पूरा नेटवर्क है। संपूर्ण जानकारी के साथ शासन के समस्त कार्यों के प्रति उनकी निष्ठा, समर्पण और बहुमान देखकर रोम-रोम जैसे बोल जाता है कि क्या नाम रखने से पूर्व ही पता था कि इस नाम में ही इतना चमत्कार है कि यह व्यक्ति वैसा ही होगा, जैसा होना चाहिए। काश! उनकी शासन भक्ति और शासन निष्ठा सबमें प्रकट हो। उन जैसी दृढ़ता और अडिग मनोवृत्ति जीवन को सार्थक करें।

सिंवाची जैन युवा मण्डल चैन्नई द्वारा बुक वितरण

सिंवाची जैन युवा मण्डल चैन्नई द्वारा जरुरतमंद करिबन 1400 बच्चों को नोट बुक वितरित की गई । यह जानकारी मण्डल अध्यक्ष राजकुमार संकलेचा ने दी।

मुनि मनितप्रभसागर जी म.सा.

पंचांग

AUG 2014

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
					1 श्रावण सुदि 5	2 श्रावण सुदि 6
3 श्रावण सुदि 7	4 श्रावण सुदि 8	5 श्रावण सुदि 9	6 श्रावण सुदि 10	7 श्रावण सुदि 11	8 श्रावण सुदि 12	9 श्रावण सुदि 13/14
10 श्रावण सुदि 15	11 भाद्रपद वदि 1	12 भाद्रपद वदि 2	13 भाद्रपद वदि 3	14 भाद्रपद वदि 4	15 भाद्रपद वदि 5	16 भाद्रपद वदि 6/7
17 भाद्रपद वदि 8	18 भाद्रपद 9	19 भाद्रपद वदि 9	20 भाद्रपद वदि 10	21 भाद्रपद वदि 11	22 भाद्रपद वदि 12	23 भाद्रपद वदि 13
24 भाद्रपद वदि 14	25 भाद्रपद वदि 30	26 भाद्रपद सुदि 1	27 भाद्रपद सुदि 2	28 भाद्रपद सुदि 3	29 भाद्रपद सुदि 4	30 भाद्रपद सुदि 5
31 भाद्रपद सुदि 6						

पर्व दिवस

10.8.14 पाक्षिक प्रतिक्रमण,	14.8.14 अक्षय निधि तप प्रारंभ	19.8.14 रोहिणी
22.8.14 पर्युषण महापर्व प्रारंभ	24.8.14 पाक्षिक प्रतिक्रमण	26.8.14 प्रभु महावीर जन्म वांचन
29.8.14 संवत्सरी प्रतिक्रमण	श्रावण सुदि 14 का क्षय	भाद्रपद वदि 7 की वृद्धि
भाद्रपद वदि 9 का क्षय		

श्री नेमिनाथ जन्म कल्याणक	श्रावण सुदि 5	7 श्री चन्द्रप्रभु मोक्ष कल्याणक	भाद्रपद वदि 7
श्री जिनलाभसूरि जन्म दिवस	श्रावण सुदि 5-1784	8 श्री सुपार्श्वनाथ च्यवन कल्याणक	भाद्रपद वदि 8
श्री नेमिनाथ दीक्षा कल्याणक	श्रावण सुदि 6	गणाधीश श्री हेमेन्द्रसागरजी म. स्वर्गवास दिवस	भाद्रपद वदि 8
गणाधीश श्री छगनसागरजी स्वर्गवास	द्वितीय श्रावण सुदि 6-1966	8 मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि जन्म दिवस	भाद्रपद वदि 14-1197
श्री पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक	श्रावण सुदि 8	श्री पर्युषण पर्व आरम्भ	भाद्रपद वदि 12
गणि श्री बुद्धिमुनि जी स्वर्गवास	श्रावण सुदि 8-2019	14 मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि स्वर्गवास	भाद्रपद वदि 14-1223
गणाधीश त्रैलोक्यसागरजी जन्म दिवस	श्रावण सुदि 14-1918	अमावस उपाध्याय श्रीमद् देवचन्द्रजी स्वर्गवास	भाद्रपद वदि 30-1812
श्री मुनिसुव्रत स्वामी च्यवन कल्याणक	श्रावण सुदि 15	श्री महावीर जन्म वांचन	भाद्रपद सुदि 1
गणाधीश श्री त्रैलोक्य सागरजी स्वर्गवास दिवस	श्रावण सुदि 15-1974	4 संवत्सरी महापर्व	भाद्रपद सुदि 4
भाद्रपद वदि 5 श्री जिनमहेन्द्रसूरि स्वर्गवास	भाद्रपद वदि 5-1914	5 गणनायक सुखसागरजी दीक्षा दिवस	भाद्रपद सुदि 5-1906
7 श्री शान्तिनाथ च्यवन कल्याणक	भाद्रपद वदि 7		

श्री कांति मणि विहार, नाशिक प्रतिष्ठा महोत्सव विशेषांक

पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा.

की स्वप्निल कल्पना

नाशिक में श्री कान्ति मणि विहार का अद्भुत निर्माण

नाशिक विहार प्रवास में पूजनीया खान्देश शिरोमणि गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वीश्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. के मन मानस में एक विचार स्फुरित हुआ कि ऐतिहासिक नाशिक नगर में खरतरगच्छ के अनुयायी एवं दादा गुरुदेव के भक्त बडी संख्या में निवास करते हैं पर यहाँ दादा गुरुदेव का कोई ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ भक्त जन अपनी भक्ति की आहुति से श्रद्धा का पवित्र यज्ञ कर सके।

उन्होंने अपनी गुरुवर्या पूजनीया खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. से इस विषय में विचार विमर्श किया। पू. गुरुवर्याश्री ने अपने इष्ट पूज्य बापजी गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा. का ध्यान किया और उनसे इस विषय में संकेत प्रदान करने की प्रार्थना की। उसी रात पूज्य बापजी म. का दिव्य संकेत प्राप्त हुआ कि नाशिक में दादावाडी का भव्य निर्माण होगा। तुम प्रयत्न करो... रास्ता बनता जायेगा... सहयोगी मिलते जायेंगे... शीघ्र ही यह कार्य संपन्नता को प्राप्त करेगा।

संकेत को प्राप्त कर अनुभूत प्रसन्नता के दिव्य वातावरण में दृढ आस्था के साथ श्रावकों से चर्चा करनी प्रारंभ की। योगानुयोग दूसरे ही दिन नाशिक के वरिष्ठ धर्मनिष्ठ श्रावक श्रेष्ठिवर्य श्री चन्द्रशेखरजी सर्राफ से मुलाकात हुई। पूजनीया गुरुवर्याश्री की पावन प्रेरणा प्राप्त कर श्रेष्ठिवर्य श्री धर्मचंदजी रांका एवं श्रेष्ठिवर्य श्री चन्द्रशेखरजी सर्राफ ने आडगांव में मुख्य मार्ग पर स्थित अपना भूखण्ड दादावाडी निर्माण हेतु समर्पित कर दिया।

भूखण्ड प्राप्त करने के बाद पूजनीया गुरुवर्याश्री के मार्गदर्शन में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं दादावाडी के नाम से ट्रस्ट मंडल का गठन करके उसे पंजीकृत कराया गया।

दादावाडी का स्वरूप कैसा हो, इस विषय पर चर्चा विचारणा करने के लिये ट्रस्ट मंडल पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के सानिध्य में पहुँचा। पूजनीया गुरुवर्याश्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. की परिकल्पना थी कि जिन मंदिर दादावाडी का मानचित्र अपने आप में अनूठा होना चाहिये। एक यूनिक दादावाडी बने.... कुछ नयापन हो....!

इन सब बातों पर विचार करके नारियल के आकार के स्थापत्य में जिन मंदिर दादावाडी बनाने का चिंतन किया गया।

पर अन्त में नालिकेर आकार के स्थापत्य को स्थगित करना पडा क्योंकि उस आकार में उँचाई बहुत हो रही थी। इतनी उँचाई के मंदिर हेतु सरकारी अनुमति प्राप्त करना संभव नहीं था। अत: इसे स्थगित करके पारम्परिक वास्तु में मंदिर

निर्माण करने का निश्चय किया गया।

पूज्य उपाध्यायश्री से निवेदन किया गया कि वे अपने गहन चिंतन और नई स्वप्निल परिकल्पना के आधार पर मानचित्र का निर्धारण करे।

पूज्यश्री ने मूलनायक के रूप में मुनिसुव्रतस्वामी के नाम की उद्घोषणा करते हुए विशाल कच्छप पर जिन मंदिर बनाने की कल्पना शिल्पी के सामने प्रस्तुत की। शिल्पी विनोदकुमार घनश्यामजी ने अत्यन्त परिश्रम के साथ कच्छप पर जिन मंदिर एवं दादावाडी के मानचित्र का निर्माण किया।

ता. 13.02.2011 को भूमिपूजन एवं खात मुहूर्त्त विधान के साथ ही जिन मंदिर दादावाडी निर्माण का श्रीगणेश किया गया। ता. 9.03.2011 को शिलान्यास विधान अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न किया गया।

जिन मंदिर दादावाडी निर्माण के साथ ही इसे विहार धाम का रूप देने के लिये उपाश्रय, भोजनशाला, धर्मशाला आदि का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया।

पूजनीया गुरुवर्याश्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. एक उर्जावान् साध्वी हैं। आपको शुभ नाम कर्म के उदय से सुरीला कण्ठ प्राप्त है। जब लीन होकर आप परमात्मा की भक्ति करते हैं तो समय जैसे थम जाता है... जैसे कोई स्तंभन प्रयोग हुआ हो... सभी अचंभित..स्तंभित रह जाते हैं। श्रोता परमात्मा के भक्ति-प्रवाह में गोते लगाने लगते हैं।

प्रवचन का माधुर्य अपने आप में अनूठा है। विषय का विवेचन, शैली की रोचकता, सम्यक् शब्द-प्रवाह, सचोट तर्क, सीधे हृदय में उतर जाते उदाहरण आपके प्रवचन को विशिष्ट बनाते हैं। आपकी पावन प्रेरणा से बडौदा, खेतिया,, अक्कलकुआं, खापर, तलोदा, शहादा, वाण्याविहिर, धूले आदि स्थानों पर महिला मंडल, बालिका मंडल, पाठशाला की स्थापना, सामायिक सत्र, साधर्मिक भक्ति, दादावाडी उपाश्रय, जिनमंदिर भूमिपूजन, शिलान्यास संपन्न हुए। बोरडी में दादावाडी एवं डहाणुं में आराधना भवन का निर्माण आदि आदि कई शासन प्रभावना के कार्य आपकी पावन प्रेरणा से हुए हैं।

उसी अमृत-श्रृंखला में एक कडी और जुड रही है- नाशिक में विहार धाम दादावाडी का निर्माण! प्रश्न हुआ कि इस विहार धाम का नाम क्या रखा जाये। पूजनीया गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. ने अपने इष्ट देव की आराधना कर श्री कान्ति मणि विहार नाम घोषित कर दिया।

गुरुवर्याश्री ने कहा-इस धाम का निर्माण उनकी प्रत्यक्ष कृपा का ही परिणाम है। इसलिये उनके नाम से ही इस विहार धाम का नामकरण होना चाहिये।

इस नामकरण ने आपके अन्तर की प्रभु भक्ति, गुरु भक्ति, संयम निष्ठा और प्रभावकता को एक स्वर प्रदान किया है। आपने इस निर्माण को गुरु-नाम देकर अपने गुरु भगवन्त के श्री चरणों में समर्पित करते हुए अपने अन्तर के समर्पण भावों को विशिष्ट अभिव्यक्ति दी है।

ता. 18 जून 2014 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के करकमलों से इस जिन मंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न हुई है। इस धाम में दो उपाश्रय, भोजनशाला, विशाल हॉल, आधुनिक सुविधाओं से सुसज्ज 12 कमरे, प्याउ आदि का निर्माण हुआ है। तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित इस कान्ति मणि विहार की शोभा अलौकिक है तो उपयोगिता अत्यधिक है।

पूजनीया गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. के अन्त:करण के आशीर्वाद-अमृत से ही आप निरन्तर शासन प्रभावना करते हुए अपने लक्ष्य की ओर गतिमान है।

श्री कांति मणि विहार, नाशिक प्रतिष्ठा महोत्सव विशेषांक

श्री कान्ति मणि विहार, नाशिक
नाशिक में दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न

पूजनीया गुरुवर्या खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया गुरुवर्या श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से नाशिक आडगांव में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 18 जून 2014 को अत्यन्त आनंद व उल्लास के दिव्य क्षणों की पावन उपस्थिति में संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ 11 जून को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के मंगल नगर प्रवेश से हुआ। पूज्यश्री अपने शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. के साथ ता. 4 को सूरत में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर उग्र विहार कर नवसारी, वांसदा, सापुतारा होते हुए नाशिक पधारे।

ता. 11 को ही परमात्मा मुनिसुव्रतस्वामी आदि नूतन जिन प्रतिमाओं, गुरु प्रतिमाओं व देव देवी प्रतिमाओं का मंगल नगर प्रवेश रखा गया था।

ता. 10 जून को रात्रि में हुई जोरदार बारिश ने सभी के मुख मंडल पर हर्ष व चिंता की रेखाऐं अंकित कर दी थी। हर्ष इस बात का था कि प्रवेश की पूर्व संध्या पर अधिष्ठायक देवों द्वारा अमृत-छिडकाव के द्वारा शुद्धिकरण किया जा रहा था।

चिंता इस बात की थी कि कल से महोत्सव प्रारंभ हो रहा है। बरसात से इस आयोजन में अव्यवस्था न हो! वैसे नाशिक में पिछले 10-15 दिनों से निरन्तर बरसात का दौर जारी ही था। ट्रस्टीगणों ने अपनी चिंता गुरुवर्या श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. के सामने रखी थी कि मौसम विज्ञानियों ने 14 से 18 तक नाशिक में भारी बरसात की संभावना व्यक्त की है। इस कारण सभी चिंताग्रस्त तो थे ही कि प्रतिष्ठा का कार्यक्रम बिना किसी विघ्न या अव्यवस्था के आनंद के साथ कैसे परिपूर्ण होगा!

शामियाने का बंदोबस्त पूर्ण रूप से वाटरप्रूफ किया गया था।

पर उस समय सभी आनंदित हो उठे जब परमात्म-प्रतिमाओं का एवं पूज्य गुरुदेवश्री का मंगल प्रवेश कार्यक्रम बादलों की आँखमिचौनी के साथ पूरा हो गया। दादावाडी का यह पहला कार्यक्रम था। बुधवार होने से छुट्टी का दिन भी नहीं था। फिर भी लोगों की विशाल उपस्थिति प्रसन्नता का संचार कर रही थी।

समारोह का संचालन करते हुए सौ. प्रीति जैन ने कहा था- आज मैं सकल श्रीसंघ की ओर से पूजनीया प्रेरणादात्री गुरुवर्याश्री को जन्म दिन की बधाई देना चाहती हूँ। इस उद्घोषणा से पूरी सभा में हर्ष की एक लहर दौड गई। बधाई देने वालों की होड लग गई।

श्रीमती कविता लोढा ने कविता द्वारा गुरुवर्याश्री को बधाई दी। ललिता लोढा एवं मीना सुराणा ने अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहा- विश्व में ज्योति की तरह जगमगाओ गुरुवर्या!

पूज्यश्री ने श्री कान्ति मणि विहार की प्रेरिका साध्वी विश्वज्योति को जन्म दिन की बधाई देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने दादावाडी का महत्व बताते हुए कहा- जिन शासन में अनेक गच्छों में अनेक आचार्य हुए हैं। समस्त आचार्यों ने अपने अपने क्षेत्र में शासन प्रभावना के अनूठे कार्य किये हैं। साहित्य के क्षेत्र में, साधना के क्षेत्र में, तपस्या के क्षेत्र में, विद्वत्ता के क्षेत्र में कार्य करने वाले बहुत आचार्य हुए हैं। परन्तु जिन शासन की अभिवृद्धि करने वाले... जैन बनाने वाले दादा गुरुदेव तो जिनदत्तसूरि आदि चार ही हुए हैं।

दादा जिनदत्तसूरि ने अपने जीवन का लक्ष्य केवल और केवल शासन के विस्तार का बनाया था। उन्होंने पूरे भारत में भ्रमण किया और लाखों परिवारों को अपने उपदेश से व्यसन मुक्त करके उन्हें वीतराग परमात्मा के शासन व धर्म से जोडा था। यदि दादा गुरुदेव की हस्ती न होती तो आज ये जैनों की बस्ती न होती। हमारे पूर्वजों को जैन बना कर विभिन्न गोत्र प्रदान किये थे। आज हमें इस बात का गौरव है कि हमें परमात्मा का शासन मिला है।

पूजनीया गुरुवर्याश्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ने कहा- आज जीवन की साधना फलीभूत होने जा रही है। पूज्य गुरुदेवश्री का पदार्पण हुआ है। भले इस दादावाडी की प्रेरणा में मेरा नाम आता हो, पर यह सब पूज्य गुरुदेवश्री का ही है।

धनंजय जैन ने भी अपने संस्कृत निष्ठ शब्दों द्वारा पूज्यश्री का भावभीना अभिनंदन किया।

लोग सब प्रतिमाओं को निहार रहे थे। प्रतिमाओं का पाषाण जितना उत्तम कोटि का था, उसका निर्माण भी उतना ही सौन्दर्य से युक्त कलात्मक था। प्रतिमाऐं जैसे मुँह बोल रही थी।

दोपहर में ठीक समय पर पूज्यश्री के सानिध्य में कुंभस्थापना, दीपस्थापना व जवारारोपण का विधान किया गया। इस विधान से पूर्व जिस नगर में ये विधि विधान संपन्न हो रहे थे, उस नगर का जिसे नाम दिया गया था कुशल कवीन्द्र नगर, का उद्घाटन किया गया।

कुंभ स्थापना की महिमा समझाते हुए पूज्यश्री ने कहा- हमें अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करनी है। अपूर्ण तो हम जन्मों जन्मों से है। पूर्णता प्राप्त करने के लिये हम इस अष्टमंगल वाले घट को अखंड जल धारा से पूर्ण करते हैं। सुख हमें अखंड चाहिये। जो खंड खंड हो, उसे सुख कहा भी नहीं जा सकता। इसलिये इस कुंभ को अखंड धारा से भरा जाता है। शांति का पाठ हमारे उद्देश्य को प्रकट कर रहा है। हमारे हर विधान का उद्देश्य विश्व शांति है।

दीपस्थापना इस लिये की जाती है क्योंकि इस जगत में अंधेरा है। हमारे चित्त में अंधेरा है। प्रकाश पैदा हो। ताकि अंधकार का नाश हो। यह दीप भी अखंड चाहिये। ताकि प्रतिष्ठा के इस मंगल कार्यक्रम में विघ्न रूप अंधेरे का प्रवेश न हो। जवारारोपण विकास का प्रतीक है। जैसे जवार बोए जाने के बाद अभिवृद्धि को प्राप्त करते हैं, वैसे ही हमारी चेतना का, आनंद का लगातार विकास हो।

ता. 12 को श्री शांतिनाथ पंचकल्याणक पूजा पढाई गई। जबकि अगला 13 तारीख का दिन विधि विधान की अपेक्षा से अत्यन्त महत्वपूर्ण दिन था।

अंजनशलाका प्रतिष्ठा एक अनूठी प्रक्रिया है। जिन शासन का यह सर्वोच्च महाविधान है। इस प्रक्रिया के प्रारंभ में विविध प्रकार की पूजाऐं करनी होती है। आज 13 ता. को वे सारे विधान किये गये। जिनमें नंद्यावर्त पूजन का विधान स्वयं प्रतिष्ठाचार्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने किया। इसके साथ ही क्षेत्रपाल पूजन, भैरव पूजन, चौसठ योगिनी पूजन, घंटाकर्ण पूजन, नवग्रह पूजन, दशदिक्पाल पूजन, अष्ट मंगल पूजन, चार देवी पूजन, लघु सिद्धचक्र पूजन, लघु वीशस्थानक पूजन आदि मांत्रिक विधान किये गये। समस्त सम्यक्त्वी देव देवियों का आह्वान करके

श्री कांति मणि विहार, नाशिक प्रतिष्ठा महोत्सव विशेषांक

उनकी पूजा अर्चना की गई। लाभार्थी परिवार इन पूजाओं में उच्चरित हो रहे मंत्रोच्चारणों की दिव्य शब्दावली व आभामंडल से अत्यन्त आह्लादित हो रहे थे। दोपहर में श्री आदिनाथ पंचकल्याणक पूजा पढाई गई।

ये दोनों दिन व्यवस्थापन, अवलोकन, संशोधन, कार्यान्वयन आदि में बीते। समारोह की पूरी रूपरेखा का वर्गीकरण किया गया। व्यवस्था समितियों की बैठकें बुलाई गई। कार्यकर्ताओं में कार्य का विभाजन कर उन्हें जिम्मेदारी सौंपी गई। कार्यक्रम का प्रारंभ 14 जून से हुआ।

ता. 14 जून 14

सूर्योदय होने के साथ मंगल मुहूर्त में आज सबसे पहले च्यवन कल्याणक का विधान किया गया। पूज्यश्री ने कुंभस्थापना, दीपस्थापना आदि विविध स्थापनों पर वासचूर्ण डाला। और उसके बाद वज्रपंजर के साथ ही विधान प्रारंभ हुआ। इस विधान का अवलोकन करने के लिये बडी संख्या में लोग आये हुए थे। शहर से 10 कि.मी. की दूरी होने पर भी इतनी जल्दी लोगों के इस समूह को देखकर आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता का अनुभव हो रहा था।

पूज्यश्री ने कल इस कल्याणक की महिमा समझाई थी। कल्याणक महोत्सव तो हमेशा देखते हैं। पर कल्याणक विधान देखने का आनंद अपना अलग ही है।

विशिष्ट मंत्रोच्चारणों के साथ शेखरजी सर्राफ एवं श्रीमती सौ. कुशलदेवी सर्राफ की माता पिता के रूप में तथा श्री संदीपजी सर्राफ एवं श्रीमती सौ. ज्योतिदेवी की सौधर्मेन्द्र इन्द्राणी के रूप में स्थापना की। जनोई धारण करवाई गई। माता पिता व इन्द्र इन्द्राणी की मर्यादा समझाई गई। इन पांच दिनों के लिये आपको अपना वर्तमान नाम व नाम से जुडी व्यवस्थाओं को गौण करना है। और परमात्मा की भक्ति के लिये जो आज आपको जिम्मेदारी सौंपी गई है, उसे ही स्मरण में रखना है।

और सचमुच माता पिता, इन्द्र इन्द्राणी झूम रहे थे। नाच रहे थे। गौरव का अनुभव कर रहे थे। अपने सौभाग्य की सराहना कर रहे थे।

प्रतिष्ठाचार्य के रूप में पूज्य गुरुदेवश्री की एवं धर्माचार्य के रूप में विधिकारक हेमंतजी जैन (मक्षी) की प्रतिष्ठा की गई। स्वर्णमुद्रा व शृंखला से गुरुपूजन किया गया।

पूज्यश्री ने विधि विधान के साथ गोदुग्ध से परिपूर्ण चांदी की कोठी में परमात्मा की पंचधातुमय प्रतिमा को बिराजमान किया गया। वर्णाक्षर लेखन का विधान किया गया। वासचूर्ण का पुनः पुनः प्रयोग किया गया। माता द्वारा चौदह स्वप्न दर्शन का संक्षिप्त विधान किया गया।

उसके बाद काफिला चला राजगृही नगरी की ओर! राजगृही नगर एवं पवित्र दिव्य मणि नगर के उद्घाटन के बाद च्यवन कल्याणक महोत्सव प्रारंभ हुआ। सुप्रसिद्ध संगीतकार विनीत गेमावत ने अपनी जानी पहचानी शैली में संगीत के दिव्य सुरों के साथ कल्याणक महोत्सव का आगाज किया।

पूज्यश्री ने अपने मांगलिक प्रवचन में कहा- परमात्मा के कल्याणक हमारा कल्याण करने वाले हैं। हमें कुछ समय के लिये चौथे आरे में प्रवेश करना है। उन्हीं भावों से मुनिसुव्रतस्वामी की जीवन कथा को निहारना है।

राजदरबार में पारस्परिक वार्तालाप, माता पद्मावती को चौदह स्वप्न आना, चौदह बालकुमारिकाओं द्वारा भावपूर्ण नृत्य के साथ चौदह स्वप्न दर्शन, इन्द्रासन कंपन, शक्रस्तव का पाठ, माता पद्मावती द्वारा पिता सुमित्र नरेश्वर को स्वप्न कथन, स्वप्नपाठक द्वारा फल कथन आदि के जीवन्त दृश्यों ने पूरी सभा को उस काल के वातावरण में प्रवेश करने व जीने को जैसे मजबूर कर दिया था। दोपहर में पंच परमेष्ठी पूजा पढाई गई।

ता. 15 जून 14

ता. 15 को प्रातः 7 बजे परमात्मा के जन्म कल्याणक का विधान किया गया। कुल देवी माता अंबिका के पूजन के पश्चात् परमात्मा के जन्म विधान के रूप में रजत-पात्र में बिराजमान परमात्मा की प्रतिमाजी को प्रकट किया गया। भक्ति का एक अनूठा, संवेदनशील भावप्रवण दृश्य निर्मित हुआ। परमात्मा के माता पिता, इन्द्र इन्द्राणी सभी लोग झूम रहे थे। पिता बने श्री शेखरजी भावुकता से भरी भक्ति की गंगा में बह रहे थे। उन्होंने पुत्र-जन्म की बधाई के रूप में विधिकारक हेमंत जैन एवं संगीतकार कश्यप पाठक को एक

श्री कांति मणि विहार, नाशिक
प्रतिष्ठा महोत्सव विशेषांक

एक स्वर्ण मुद्रिका अर्पित की।

राजगृही नगर में ठीक नौ बजे कल्याणक महोत्सव प्रारंभ हुआ। जन्म कल्याणक के अन्तर्गत 56 दिक्कुमारिकाओं का आगमन, नृत्य, सूतिकर्म विधान, रक्षापोटली बंधन आदि विधि संपन्न होने के पश्चात् इन्द्राणी का आगमन, नृत्य व तिलक का विधान हुआ। उसके बाद इन्द्रासन कंपन, शक्रस्तव, पांच रूपों के साथ परमात्मा को लेकर मेरूपर्वत की ओर गमन, 250 अभिषेक, स्वर्ण-वृष्टि आदि विधि विधानों को देव देवियों के रूप में देखा। देवलोक-सा दृश्य छा गया था। इन्द्र बने श्रावक परमात्मा के अभिषेक कर धन्यता का अनुभव कर रहे थे।

आज पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा पढाई गई।

ता. 16 जून 2014

आज कार्यक्रम बहुत लम्बा था। दो दिन का कार्यक्रम एक दिन में पूरा करना था। जन्म बधाई से राजदरबार का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, जो नामकरण, पाठशालागमन, मामेरा, विवाह, राज्याभिषेक व नवलोकान्तिक देवों की विनंती के साथ पूरा हुआ। घटिका यंत्र उस समय दो बजा रहा था। फिर भी लोग बडे चाव से सारे दृश्य देख रहे थे, संवाद सुन रहे थे।

हमने कितनी बार अंजनशलाकाऐं देखी होगी... वे ही दृश्य हैं, वे ही संवाद है... मात्र पात्र बदलते हैं... कथा... पटकथा वही रहती है। फिर भी हमारा मन इन दृश्यों से नहीं भरता। मन उसी उत्सुकता और रस से निहारता है। यह महिमा परमात्मा के कल्याणक की है। जब भी देखो... देखते ही रह जाते है। जितनी बार देखो.. और अधिक आनंद की अनुभूति होती है।

राजज्योतिषी के संवाद और उनके अभिनय ने पूरी सभा को हंसने पर ही नहीं, अपितु ठहाके लगाने पर मजबूर किया था। तो इन्द्र महाराजा के क्रोध और उसके बाद पश्चात्ताप के अभिनय ने इन्द्र महाराजा के साक्षात् विनय को प्रकट किया था। माता पिता तो सचमुच के महाराजा और महारानी हो गये थे। उनके अभिनय में कृत्रिमता का कहीं आभास नहीं हो रहा था। मामा मामी, बहिन बहिनोई, भूआ भूआडोजी, सास ससुर आदि सारे पात्र जैसे जीवंत हो उठे थे। राजदरबारी महामंत्री, नगरसेठ, खजांची, भंडारी, सेनापति, छडीदार आदि अपने अभिनय के प्रति बडे गंभीर थे।

खरतरगच्छ चातुर्मास सूची- 2014

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. का समुदाय

आज्ञा प्रदाता- पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनकैलाशसागरसूरीश्वरजी म.सा.

पू. आचार्य श्री जिनकैलाशसागरसूरिजी म. ठाणा -१
श्री जैन श्वे. नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ
पो. मेवानगर 344025
वाया-बालोतरा-जिला बाड़मेर (राज.)
फोन- 09462303207 — 1

पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. ठाणा-७
श्री मणिधारी भवन, दादावाडी, श्रीपादनगर
पो इचलकरंजी - 416115 जि. कोल्हापुर महा.
फोन- 0230 2420700 मुकेश- 09825105823
Email- jahajmandir99@gmail.com — 2

पू. मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म. ठाणा २
श्री मणिधारी भवन, अंबिका सोसायटी,
दरगाह रोड,
पो. नवसारी-396445 गुजरात — 3

पू. गणि श्री पूर्णानंद सागरजी म. ठाणा-१
श्री जिन हरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़
पो. पालीताणा-364270
जिला-भावनगर (गुज.) — 4

पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.
मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा २
श्री जैन श्वे. मंदिर
पो. चौहटन 344702
जिला-बाडमेर (राज.) — 5

पू. मुनिश्री ललितप्रभ सागरजी म. ठाणा-३
मुकुट मांगलिक भवन
व्यंकटेश बालाजी शिवमंदिर के पास,
गुमाश्ता नगर पो. इन्दौर
म.प्र. — 6

पू. मुनि श्री पीयूष सागरजी म. ठाणा-४
श्री जैन श्वेताम्बर कोठी,
पो. शिखरजी मधुबन -825329
जिला-गिरडीह
(झारखण्ड) — 7

पू. मुनि महायश सागरजी म.-१
श्री जैन श्वे. जिनचन्द्रसूरि दादावाडी
पो. बिलाडा- 342602
जिला- जोधपुर
(राज.) — 8

पू. मुनि श्री मणिरत्न सागरजी म. ठाणा-२
श्री चन्द्रप्रभु जैन श्वे. मंदिर
पो. मंदावर तह.-महुवा
जिला-दौसा
राज. — 9

पू. मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. ठाणा-१०
जैन श्वेताम्बर भंडार
पो. पावापुरी-803115
जिला-नालन्दा
(बिहार) — 10

पू. मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. ठाणा ३
श्री जिनहरि विहार
तलेटी रोड, पो. पालीताना- 364270
जिला-भावनगर
(गुज.) — 11

पू. मुनि श्री मैत्रीप्रभसागरजी म. १
श्री सौरभसागर सभागार एवं शांति निवास
लश्कर गंज
पो. सरधना- 250342 जिला मेरठ
उ.प्र. — 12

पू. मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. 1
श्री जिनहरि विहार
तलेटी रोड
पो. पालीताना- 364270
जिला-भावनगर (गुज.) — 13

पूज्य मोहनलालजी म.सा. समुदाय

पू. मुनि श्री कुशलमुनिजी म. ठाणा-४
श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी
दादा साहेब ना पगला, नवरंगपुरा
पो. अहमदाबाद-380009 (गुज.) — 1

पू. मुनि श्री विनयमुनिजी म. ठाणा-३
शासन सम्राट आराधना भवन, प्रताप नगर
आर.वी. देसाई रोड,
पो. वडोदरा
(गुज.) — 2

पुण्य मण्डल-विचक्षण मण्डल

पू. महत्तरा साध्वी श्री विनीता श्रीजी म. ठाणा-४
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी
28, रामबाग, गणेश कॉलोनी
पो. इन्दौर-452004
(म.प्र.) — 1

पू. साध्वी श्री चन्द्रकला श्रीजी म. ठाणा-५
श्री जिन कुशल सूरि दादावाड़ी
पो. मालपुरा 304502
जिला-टोंक
(राज.) — 2

पू साध्वी श्री निर्मला श्रीजी म. १
श्री जैन श्वे. दादावाडी
मोतीडुंगरी रोड
पो. जयपुर 302004
(राज.) — 3

पू. साध्वी श्री मनोहर श्रीजी म. ठाणा ४
श्री जैन श्वे. बाडमेर समाज भवन
10वीं ए रोड, सरदारपुरा
पो. जोधपुर-342001
राज. — 4

पू. साध्वी श्री सुरंजना श्रीजी म. ५
श्री जैन श्वे. विद्या शाला
नवघरी
पो. पादरा-391440 जिला वडोदरा
गुजरात — 5

पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. ठाणा १६
श्री जैन श्वेताम्बर भंडार
पो. पावापुरी-803115
जिला-नालन्दा
बिहार — 6

खरतरगच्छ चातुर्मास सूची- 2014

पू. साध्वी श्री मुक्तिप्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा-३
श्री जिनदत्तसूरि जैन खरतरगच्छ दादावाड़ी
पाल बिचला, विनयनगर
पो. अजमेर-305001 (राज.)
7

पू. साध्वी श्री पुष्पा श्रीजी म.-१
श्री शीतलनाथ जैन उपाश्रय
पो. फलोदी-342301
जिला-जोधपुर (राज.)
8

पू. साध्वी श्री भाग्ययशा श्रीजी म. ठाणा-४
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ शीतलवाडी उपाश्रय
गोपीपुरा, सुभाष चौक, ओसवाल मोहल्ला
पो. सूरत-391440 गुजरात
9

पू. साध्वी श्री विजयप्रभाश्रीजी म. ठाणा १२
जैन भवन, बडा बाजार
पो. कोलकाता-700007 पं. बंगाल
10

पू. साध्वी श्री सुज्येष्ठाश्रीजी म. ठाणा ३
श्री जैन श्वेताम्बर कोठी,
पो. शिखरजी मधुबन -825329
जिला-गिरडीह (झारखण्ड)
11

पू. साध्वी श्री सुरेखा श्रीजी म. ठाणा ५
श्री आनंद भवन, त्रिपोलिया गेट, धान मंडी
पो. रतलाम-457001 म.प्र.
12

पू. साध्वी श्री हर्षयशाश्रीजी म. ठाणा २
श्री जैन श्वे. मंदिर उपाश्रय, मारवाडी रोड
पो. भोपाल-462001 म.प्र.
13

पू. साध्वी श्री समदर्शिता श्रीजी म. १
श्री जिन हरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़
पो. पालीताणा-364270 जिला-भावनगर (गुज.)
14

पू. साध्वी श्री मुक्तांजनाश्रीजी म. ठाणा ३
कुशल दर्शन सोसायटी, जैन दादावाडी
डॉ. हाउस के पास, पर्वत पाटिया
पो. सूरत गुजरात
15

पवित्र मण्डल

पू. साध्वी श्री दिव्यप्रभा श्रीजी म. ठाणा-7
श्री जिनहरिविहार धर्मशाला
पो. पालीताणा- 364270
(गुज.)
1

पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.
श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. ठाणा ३
श्री जैन श्वे. मू.पू. मंदिर, 114 नवी पेठ,
कांग्रेस भवन के सामने, पो. जलगांव-425001
(महाराष्ट्र) फोन-0257 2229965
2

पू. साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. ठाणा ३
बाबू माधवलाल धर्मशाला, तलेटी रोड़
पो. पालीताणा-364270
जिला-भावनगर
(गुज.)
2

पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. ठाणा ४
श्री धर्मनाथ जैन मंदिर
94 अम्मन कोइल स्ट्रीट,
पो. चेन्नई 600079
(तमिलनाडु)
3

पू. साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म. ठाणा २
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन श्वे. मंदिर
महावीर बाग, एरोड्रम रोड
पो. इन्दौर 452001
(म.प्र.)
4

पू. साध्वी श्री शीलगुणाश्रीजी म. ठाणा ३
विचक्षण भवन, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता
जौहरी बाजार
पो. जयपुर- 302003
राज.
5

पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. ठाणा ४
श्री जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन
हमीरपुरा
पो. बाडमेर- 344001
राज.
6

पू. साध्वी श्री संयमप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा २
श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर
पो. शेरगढ-342022
जिला- जोधपुर
राज.
7

पू. साध्वी श्री संयमज्योति श्रीजी म. ठाणा-2
कुशल भवन, हीरावाडी
पो. नागोर-341001
राज.
8

सज्जन मण्डल

पू. साध्वी श्री शशिप्रभा श्रीजी म. ठाणा ६
जैन श्वेताम्बर श्री संघ
जवाहरनगर
पो. जयपुर-302004
राज.
1

चंपा मण्डल

पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म. ठाणा-५
श्री शांतिनाथ जैन मंदिर
कंचगार गली
पो. हुबली- 580028
कर्णाटक
1

पू. साध्वी श्री पूर्णप्रभा श्रीजी म. ठाणा-६
श्री राजस्थान जैन श्वे. मू.पू. संघ
स्टेशन रोड
पो. गदग- 582101
(कर्णाटक)
2

पू. साध्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म. ठाणा- ११
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी
89/90 गोविन्दप्पा रोड, बसवनगुडी रोड
पो. बंगलुरू- 560 004
(कर्णाटक)
3

पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. ठाणा-४
श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ जैन श्वे. मू.पू. आराधक
संघ, गुरुकुल रोड, यलमेली कॉम्प्लेक्स के सामने
बीएलडीई रोड
पो. बीजापुर- 586101 (कर्णाटक)
4

पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. ठाणा ३
जैन श्वे. मंदिर, अलंगयम रोड
पो. तिरूपातूर- 635601
जिला वेल्लुर
तमिलनाडू
5

खरतरगच्छ साधु साध्वी चातुर्मास - 2014

शिव मण्डल-प्रेम मण्डल

पू. साध्वी श्री विनोद श्रीजी म. ठाणा ७
खरतरगच्छ उपासरा गुजराती कटला,
नारेलों की पोल
पो. पाली 306401
(राज.)
1

पू. साध्वी श्री सुलोचना श्रीजी म. ठाणा ९
श्री जैन खरतरगच्छ समाज
1945 कच्चा कटरा, कटरा खुशालराय,
किनारी बाजार,
पो. दिल्ली- 110006
2

पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. ३
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी
आर. ब्लॉक,
साउथ एक्सटेंशन पार्ट- 2
पो. नई दिल्ली- 110049
3

पू. साध्वी श्री कल्पलता श्रीजी म. ठाणा ६
श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी
दादा साहेब ना पगला, नवरंगपुरा
पो. अहमदाबाद-380009
(गुज.)
4

पू. साध्वी श्री प्रियस्मिता श्रीजी म. ठाणा ७
श्री पार्श्वनाथ जैन श्वे. मंदिर
कार स्ट्रीट
पो. बल्लारी- 583101 (कर्णाटक)
5

पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. ठाणा ३
श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी
दादा साहेब ना पगला, नवरंगपुरा
पो. अहमदाबाद-380009 (गुज.)
6

पू. साध्वी श्री योगांजनाश्रीजी म. ठाणा ४
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ
कुशल भवन, शांतिनगर
पो. सांचोर- 343041 जिला-जालोर (राज.)
7

पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा २
श्री जैन श्वे. मंदिर
गुलाबनगर, खेमे का कुआ
पो. जोधपुर-342001
राज.
8

पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा २
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, मुंबई
विट्ठल वाडी, दूसरी पांजरापोल,
सी.पी.टेंक रोड
पो. मुंबई- 400004 (महा.)
9

पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. ठाणा ४
श्री धर्मनाथ जैन मंदिर, काजी चकला,
चांदनी चौक,
पो. जामनगर 361001
गुज.
10

ज्ञान मण्डल

पू. प्रवर्तिनी श्री कीर्तिप्रभा श्रीजी म. ठाणा ४
श्री महावीर स्वामी जैन देरासर
8 विजयवल्लभ चौक, पायधुनी
पो. मुंबई 400003
(महा.)
1

पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. ठाणा ४
श्री आदि जिन श्वे. जिनालय
16 लक्ष्मी चेट्टी स्ट्रीट, सेवा पेठ
पो. सेलम- 636002
तमिलनाडु
2

पू. साध्वी श्री राजेशश्रीजी म. ठाणा ६
श्री वासुपूज्य जैन मन्दिर दादावाड़ी, न्यू प्लॉट
पो.-अमलनेर-425401,
जिला-जलगांव
(महाराष्ट्र)
3

पू. साध्वी श्री सुलक्षणा श्रीजी म. ठाणा-२
जैन मंदिर दादावाडी
पो. महरौली 110030
दिल्ली
4

पू. साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. ५
श्री सुगनजी का उपासरा,
रांगडी चौक
पो. बीकानेर-334001
राज.
5

पू. साध्वी श्री जयरेखाश्रीजी म. १
श्री धर्मनाथ जैन श्वे. मंदिर,
प्रतापगंज पारा
पो. जगदलपुर-494001 जि.बस्तर
छ. ग.
6

पू. साध्वी श्री सुयशाश्रीजी म. ३
श्री रिषभदेव जैन श्वे. मंदिर, गांधी चौक
पो. नयापारा राजिम 493885
जिला रायपुर
(छग)
7

पू. साध्वी श्री मंजुला श्रीजी म. ठाणा ३
श्री ऋषभदेव जैन श्वे. मंदिर
सदर बाजार
पो. रायपुर-492001
छ.ग.
8

पू. साध्वी श्री जिनशिशु प्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा ८
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ
पिपली बाजार
पो. जावरा-457226 जिला- रतलाम
(म.प्र.)
9

पू. साध्वी श्री प्रियंकराश्रीजी म. ठाणा ४
जैन श्वे. मंदिर
पो. वारासिवनी-481001
जिला- बालाघाट
म.प्र.
10

पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म. ठाणा ५
श्री जैन श्वे. दादावाडी
मोतीडुंगरी रोड
पो. जयपुर-302004
राज.
11

खरतरगच्छ साधु साध्वी चातुर्मास – 2014

पू. साध्वी श्री शुभंकराश्रीजी म. ठाणा ३
जैन श्वे. मंदिर उपाश्रय
पो. मोकलसर-344044
जिला- बाडमेर
राज. 12

पू. साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्रीजी म. ठाणा २
खरतरगच्छ उपाश्रय, दूधेश्वर सोसा.,
झाबक भवन के पीछे, आजवा रोड़,
पो. वडोदरा-390019
गुज. 13

पू. साध्वी श्री मृगावती श्रीजी म. ठाणा-३
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी
एम. जी. रोड
पो. रायपुर- 492001
छ.ग. 14

पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. ठाणा ५
श्री जैन श्वे. मंदिर दादावाडी
पो. डोंडीलोहारा- 491771
जिला बालोद
छ.ग. 15

पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. ठाणा-२
श्री संभवनाथ जिनालय दादावाडी,
श्री जिनदत्तसूरि मार्ग जी.पी.ओ. के सामने
पो. भुज- 370001 कच्छ
गुजरात 16

पू. साध्वी श्री अभ्युदया श्रीजी म.सा. ठाणा-३
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ आराधना भवन,
असाडी गली,
पो. महिदपुर-456453
जिला-उज्जैन(म.प्र.) 17

प्रमोद मण्डल

पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. एवं
पू. बहिन म. डॉ श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ठाणा-५
श्री अजितनाथ जैन श्वे. मू.पू. संघ
जयवंत चौक, गणपति मंदिर के पास,
पो. नंदुरबार-425409 (महा.) 1

पू. साध्वी डॉ श्री शासनप्रभाश्रीजी म. ठाणा-२
श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी
दादा साहेब ना पगला, नवरंगपुरा
पो. अहमदाबाद-380009
(गुज.) 2

पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म. ठाणा-१
श्री बही पार्श्वनाथ तीर्थ पेढी,
पो. बही स्टे. पीपलिया मंडी,
जिला-मंदसौर (म.प्र.)
फोन- 07424 241430 3

पू. साध्वी डॉ श्री नीलांजनाश्रीजी म. ठाणा-४
श्री मणिधारी भवन, दादावाडी, श्रीपादनगर
पो. इचलकरंजी-416115
जि. कोल्हापुर
महा. 4

पू. साध्वी श्री कुशलरंजनाश्रीजी म. १
श्री जिन हरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़
पो. पालीताणा-364270
जिला-भावनगर
(गुज.) 5

पू. मोहनलालजी म. का समुदाय

पू. साध्वी श्री कुशलश्रीजी म. ठाणा-१
श्री केसरियानाथ धर्मशाला,
मोती चौक
पो. जोधपुर-342001
(राज.) 1

पू. साध्वी श्री विरतियशाश्रीजी म. ठाणा-२
श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी
दादा साहेब ना पगला, नवरंगपुरा
पो. अहमदाबाद-380009
(गुज.) 2

अन्य विविध मण्डल

पू. साध्वी श्री महेन्द्रश्रीजी म. ठाणा - २
नई पोषधशाला, धनकुटा गली, जनकपुरा
पो. मंदसौर-458001
(म.प्र.) 1

पू. साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. ठाणा-५
जैन श्वे. दादावाडी
10वीं ए रोड, सरदारपुरा
पो. जोधपुर-342001
राज. 2

पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ठाणा-१
जैन श्वेताम्बर मन्दिर,पद्मावती नगर,
अभिनन्दन कॉलोनी के पास
पो. मंदसौर-458001
(म.प्र.) 3

यह चातुर्मास सूची श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर मांडवला द्वारा प्रसारित की गई है।

आज ही जहाज मंदिर मासिक पत्रिका के सदस्य बनें व अपने मित्रों को भी प्रेरित करें :-

15 वर्षीय सदस्यता : 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता : 2000 रूपये
06 वर्षीय सदस्यता : 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता : 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता : 200 रूपये

ता. 17 जून 14

और दूसरे दिन दीक्षा कल्याणक का तो दृश्य ही अनूठा था। ता. 17 जून 2014! आज परमात्मा के दीक्षा कल्याणक का वरघोडा! पूरा खान्देश जैसे उतर गया था। पूजनीया गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. का खान्देश में विचरण व चातुर्मास काफी हुए हैं। प्रदेश में अपनत्व भरा भाव है। मुंबई, भायंदर, भिवंडी, ठाणा, कल्याण, सूरत, बडौदा, बिजयनगर, चेन्नई, बैंगलोर, अहमदाबाद, हैदराबाद, पूना, जलगांव, नंदुरबार, शहादा, तलोदा, वाण्याविहिर, अक्कलकुआं, सारंगखेडा, खापर, सेलंभा, दोंडाइचा, धूलिया, ओझर, चांदवड आदि कितने ही गांवों के संघ पधार गये थे। यहाँ की सारी व्यवस्थाऐं ट्रस्ट मंडल के मार्गदर्शन में तमन्ना इवेन्ट के राहुल जैन व उनकी टीम ने सम्हाल रखी थी। पूरा ग्रुप विनय और मुस्तैदी के साथ लगा हुआ था।

खुशनुमा वातावरण था। बादलों की आंखमिचौनी के बीच भारी दबदबे के साथ परमात्मा का वरघोडा प्रारंभ हुआ। वरघोडे की विशिष्टता थी कि परमात्मा के रथ को युवा लोग ही खींच रहे थे। खींच क्या रहे थे, अपनी श्रद्धा और समर्पण के भावों को अभिव्यक्ति दे रहे थे। जिसे देखो, नाच रहा था। मौसम ने पूरे वातावरण को वातानुकूलित कर दिया था। नौ बजे रवाना हुआ वरघोडा साढे ग्यारह बजे राजगृही नगर में पहुँचा।

सभा का प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम पूजनीया प्रेरणादात्री गुरुवर्या श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ने अपने हृदय के उद्‌गार प्रकट किये। इस संपूर्ण निर्माण व प्रतिष्ठा महोत्सव का सारा श्रेय पूजनीया गुरुवर्याश्री का ही था। उनका पुरूषार्थ सार्थक हो रहा था। वे भावाभिभूत हो रहे थे। उन्होंने अपने प्रवचन के प्रारंभ में अपने गुरुदेवों व गुरुवर्याओं का स्मरण किया। अपने अन्तर के दर्द को अभिव्यक्ति देते हुए कहा- आज मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होती यदि मेरी गुरुमैया पूजनीया दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. यहाँ पधारती। स्वास्थ्य की अनुकूलता न होने से वे नहीं पधार पाई। पालीताना की पावन भूमि में बिराजमान गुरुवर्याश्री वहीं से आशीर्वाद की अमृतवर्षा कर रही है। आज उनका स्मरण मेरे रोम रोम को भिगो रहा है।

उन्होंने फरमाया- बचपन में छोटी उम्र में मेरी दीक्षा हुई। यह मेरी गुरुवर्याश्री की ही मेहनत व कृपा का परिणाम है कि मैं कुछ

योग्य हो पाई। मुझे बचपन से ही आगे बढने की प्रेरणा देने वाले मेरी श्रद्धा के केन्द्र पूज्य गुरुदेवश्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की अमीवर्षा से ही यह सब कुछ संभव हुआ है।

इस परिसर के निर्माण में मैं तो निमित्त मात्र हूँ। यह सब उनकी कृपा का ही परिणाम है। इसलिये पूजनीया गुरुवर्याश्री ने यह पूरा परिसर पूज्य गुरुदेवश्री को समर्पित किया है। इसलिये इस परिसर का नाम श्री कान्ति मणि विहार है।

पूजनीया गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. पालीताना में बिराजे बिराजे ही अपनी मंत्र साधना और इष्ट बल के आधार पर सकारात्मक ऊर्जा और संकल्प शक्ति की दिव्य तरंगें यहाँ प्रेषित कर रहे हैं। उनकी पूज्य गणनायकजी महाराज के प्रति विशेष श्रद्धा है। उन्हें उनका इष्ट बल प्राप्त है।

पूज्य गुरुदेवश्री ने अपने प्रवचन में कहा- आज मैं साध्वी विश्वज्योतिश्री को बहुत बहुत बधाई देना चाहता हूँ। जिसने नाशिक जैसे शहर में जहाँ दादा गुरुदेव के अनुयायी बहुत कम संख्या में वर्तमान है, दादावाडी का अद्‌भुत व अनूठा निर्माण करवा कर एक कमी की पूर्ति की। उसने छोटी उम्र में बहुत प्रगति की है। मैं दादा गुरुदेव से प्रार्थना करता हूँ कि वह इसी प्रकार प्रगति के पथ पर बढती हुई आत्म कल्याण करे। मेरे भाव आशीर्वाद सदा इसके साथ है। द्रव्य आशीर्वाद के रूप में मैं आज सकल संघ के समक्ष स्फटिक

रत्न की यह दिव्य प्रतिमा इसे भेंट करना चाहता हूँ।

और उस समय बहुत भावनाशील दृश्य उपस्थित हुआ जब पूज्यश्री ने अपने करकमलों द्वारा परमात्मा पार्श्वनाथ की अनूठी प्रतिमा पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. को भेंट की।

पूज्य गुरुदेवश्री की आंखें वात्सल्य-प्रेम से सराबोर थी तो पूजनीया गुरुवर्याश्री की आंखें कृतज्ञता और समर्पण के गीत गा रही थी।

पूज्यश्री ने उस समय एक अनूठी बात कही- नाशिक की यह दादावाडी साध्वी विश्वज्योतिश्री की प्रेरणा का परिणाम है। उसके माता पिता धन्य है, जिसने ऐसे रत्न को जन्म दिया। आज इस सभा में उसका पूरा सांसारिक परिवार आया हुआ है। साध्वी विश्वज्योतिश्री की पूजनीया माताजी का अभिनंदन किया जाना चाहिये। संघ की ओर से माताजी व भाई का बहुमान किया गया।

पूज्यश्री ने कहा- नाशिक दादावाडी की यह भूमि अमर हो गई। भूमिदाता परिवार श्रीमती कमलाबाई मोतीलालजी सराफ कवाड परिवार, नाशिक एवं धनराजजी धर्मचंदजी रांका परिवार

हैदराबाद... दोनों श्वसुर-जामाता का यह भूमिदान यशस्वी हो गया। जिस भूमि ने परमात्मा एवं दादा गुरुदेव को धारण किया, मुंबई-आगरा मुख्य मार्ग पर हाईवे टच यह विहार धाम अत्यन्त उपयोगी होने वाला है। यहाँ जो भी व्यक्ति आया है, उसने भूरि भूरि

प्रशंसा अनुमोदना की है।

श्री शेखरजी ने इस परिसर के निर्माण में कठोर परिश्रम किया है। न दिन देखा.. न रात देखी! पूरा समय दिया। उनके पुरूषार्थ की जितनी अनुमोदना की जाये, कम होगी। मंत्री श्री रमेशजी निमाणी, खजिनदार श्री विनोदजी मेहता, ट्रस्टी डॉ. श्री पुखराजजी भंसाली आदि ने पूरी मेहनत की है। इन सब ट्रस्टियों व कार्यकर्ताओं की मेहनत के परिणाम स्वरूप ही प्रतिष्ठा का अनूठा इतिहास रचा गया।

उसके बाद परमात्मा का दीक्षा कल्याणक विधान किया गया। वातावरण संयम-मय हो गया था। पूज्यश्री ने दीक्षा कल्याणक की व्याख्या करते हुए कहा- संयम ही मोक्ष प्रदाता है। संयम है तो मोक्ष है। संयम के बिना मोक्ष नहीं। तीर्थंकर जैसे तीर्थंकर जो जन्म के साथ तीन ज्ञान के स्वामी होते हैं... जिनका गृहस्थ जीवन भी अनासक्त होता है.. ऐसे तीर्थंकर भगवान को भी संयम तो स्वीकार करना ही पडा। संयम स्वीकार कर पूरे जगत को उन्होंने संदेश दिया है कि संयम के बिना आत्मा का उद्धार नहीं है।

माता, पिता, कुलमहत्तरा और बहिन की प्रस्तुति हृदय से हो रही थी। उनकी अभिव्यक्ति ने सारी सभा को जेब से रूमाल निकालने पर मजबूर कर दिया। सबकी आँखें भरी हुई थी।

माता पिता ऐसे बोल रहे थे जैसे वे अभिनय नहीं कर रहे हो, बल्कि साक्षात् जी रहे हों। लग रहा था जैसे सचमुच उनका पुत्र संयम ग्रहण करने जा रहा है।

एक भक्ति भरा मौन छाया हुआ था। संयम की अनुमति रूप प्रसंग पूर्ण होने के पश्चात् पूज्यश्री मंच पर पधारे और परमात्मा की दीक्षा विधि संपन्न की। अपने हाथों सारे आभूषण उतारे... पंचमुष्टि लोच किया। और ओम् नमः सिद्धम् का उच्चारण कर तीन बार करेमि भंते (भंते शब्द नहीं बोला गया) सूत्र का उच्चारण किया। श्लोक और मंत्र पाठ कर वासचूर्ण डाला। इन्द्र महाराज ने देवदुष्य वस्त्र परमात्मा के बांये कंधे पर रखा और परमात्मा चार ज्ञान के स्वामी हो गये।

पूज्यश्री ने विस्तार से समझाया कि दीक्षा ग्रहण के अवसर पर परमात्मा सबसे पहले सिद्धों को नमस्कार क्यों करते हैं! परमात्मा की आत्मा जब अव्यवहार राशि में थी। तब किसी न किसी अनाम सिद्ध भगवंत ने निर्वाण पाया होगा और उनकी आत्मा अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आई होगी। यह उपकार सिद्ध भगवंत का है। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता समर्पित करने परमात्मा सिद्ध भगवंत को नमस्कार करते हैं।

प्रश्न है कि करेमि भंते इस पाठ में भंते शब्द का उच्चारण क्यों नहीं करते! इसलिये नहीं करते क्योंकि भंते शब्द गुरू का

परिचायक है। परमात्मा का इस भव में कोई गुरू नहीं होता। वे स्वयं संबुद्ध होते हैं।

पूज्यश्री ने परमात्मा मुनिसुव्रतस्वामी के पूरे घटनाक्रम सुनाये। उन्होंने एक हजार वैरागियों के साथ संयम ग्रहण किया था। लगभग साढे ग्यारह मास का छद्मस्थ काल रहा। साधना के परिणाम स्वरूप घाती कर्मों का सर्वथा क्षय कर परमात्मा ने केवलज्ञान प्राप्त कर दिया। उसके बाद तीर्थ की स्थापना, विचरण और निर्वाण से संबंधित विवेचना की।

पूज्यश्री ने कहा- तीन कल्याणक यहाँ सार्वजनिक हुए। दो कल्याणक आज रात्रि में होंगे। अंजनशलाका करना, यह केवल ज्ञान कल्याणक है। उसके बाद अभिषेक करना, यह मोक्ष कल्याणक है।

पूज्यश्री ने सकल संघ को आमंत्रण देते हुए कहा- जिन्हें भी आज रात्रि में अंजनशलाका का महत्वपूर्ण विधान देखना है, वे आज रात्रि में ठीक 3 बजे विधि विधान मंडप में पधार जावें।

सकल संघ से मिच्छामि दुक्कडम् दिलवाया गया। परमात्मा का पहला विहार हुआ। लोगों ने अक्षतों से बधाया।

आज रात्रि को अंजनशलाका का महाविधान होना है। नन्हीं बालिका द्वारा अंजन घोटा गया था। पूज्यश्री को दिव्य वस्त्र और अंजन वहोरा दिया गया। ट्रस्टी व कार्यकर्ता अत्यन्त प्रमुदित थे। आज जो वातावरण नजर आ रहा था, वह प्रफुल्लित करने वाला था। चारों ओर प्रसन्नता की लहरें बह रही थी।

ता. 18 जून 14

रात्रि को ठीक 3.30 बजे जब पूज्यश्री अंजन विधान हेतु दिव्य वस्त्रों में सुसज्ज होकर पधारे, तो यह देखकर आश्चर्यचकित हो उठे कि पूरा हॉल भरा हुआ था। इतनी सुबह... इतनी जल्दी... इतने सारे लोगों का आना... परमात्मा की यह भक्ति देखकर सभी अहोभाव से भर उठे।

पूज्यश्री के चेहरे का तेज अनूठा था। लगता था- आज पूज्यश्री का रूप स्वरूप कुछ दूसरा हो गया है। उनका खिलखिलाता चेहरा आज गंभीर हो उठा था। ठीक समय पर उन्होंने विधि विधान प्रारंभ किया। वासचूर्ण डाला। मंत्रविन्यास किया। और थोडी देर बाद साध्वीजी, श्रावक, श्राविकाओं को बाहर भेजा, यह कहकर कि आप बाहर बैठ कर भक्ति करें। आपकी भक्ति अंजन विधान को

ऊर्जा प्रदान करेगी। भीतर पूज्यश्री व क्रियाकारक थे। बाहर मंत्रोच्चारणों की आवाज आती रही। स्वाहा शब्द सुनाई देता रहा। और अचानक झालर की रणकार लगातार तीव्र गति से बज उठी। बाहर बैठे हम सभी का मन आतुर हो उठा। लगा कि अंजन का महाविधान संपन्न हो गया है। हमारा मन नाच उठा। ओम् नमो भगवते मुनिसुव्रताय का मंत्र उच्च स्वर से गूंजने लगा।

आधा घंटा बीता होगा कि द्वार खुला। कौन वह भाग्यशाली होगा जो अंजन के महाविधान के बाद परमात्मा के प्रथम दर्शन करेगा व सकल संघ को करायेगा! बोली लगी और लाभ लिया श्री पृथ्वीराजजी चेतनकुमारजी बोरा परिवार ने! वे भीतर आये... नाचते नाचते आये... और भीगे नयनों से परमात्मा के दर्शन किये... सकल संघ को निवेदन किया! सकल संघ धन्य हो उठा। परमात्मा के दर्शन तो हमेशा करते हैं। पर अंजन के बाद प्रथम दर्शन का आज अनूठा लाभ मिला है। धन्यता धन्यता का स्वर चेतना का रोम रोम से गूंजने लगा।

परमात्मा को चतुर्मुख रूप से समवशरण में बिराजमान किया

श्री कांति मणि विहार, नाशिक
प्रतिष्ठा महोत्सव विशेषांक

गया। और फिर घडी आई परमात्मा को पोंखने की! लाभ पुण्यशाली श्राविकाओं ने बोली लेकर लिया। पोंखने की विधि के विधि हुई परमात्मा की प्रथम देशना की!

पूज्यश्री ने परमात्मा के प्रतिनिधि बन कर परमात्मा की प्रथम देशना सुनाई। प्रवचन तो पूज्यश्री ने बहुत सुनते हैं। पर प्रथम देशना की आवाज कुछ अलग थी... शब्द रचना अलग थी... शैली अलग थी... भावों की गहनता अलग थी...! देशना का अमृत ग्रहण करने के पश्चात् सभी ने कुछ न कुछ नियम स्वीकार करने के लिये हाथ जोड लिया।

परमात्मा के मंगल प्रवेश की विधि होने के पश्चात् प्रतिष्ठा का विधान प्रारंभ हुआ। ठीक 9 बजे पूज्यश्री मंदिर के प्रांगण में पधार गये। मंत्रोच्चारण होने लगे। ओम् पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् की दिव्य ध्वनि से पूरा परिसर गूंजने लगा। जिन मंदिर दादावाडी में लाभार्थी परिवार पधार गये थे। बाहर भारी भीड प्रतिष्ठा के दिव्य नजारे को देख रहे थे। विशाल टी.वी. पर भीतर के सारे दृश्यों का साक्षात्कार कर प्रतिष्ठा के पूर्ण साक्षी हो रहे थे। परमात्मा की इस भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव में स्थानकवासी श्रमण संघ के सुप्रसिद्ध महासती श्री मधुस्मिताजी अपनी शिष्या के साथ पधारे थे। वातावरण में खुशियाँ दुगुनी हो गई थी।

10.45 पर पूज्यश्री भीतर पधार गये। मंत्रोच्चारणों का दिव्य उद्घोष उच्च स्वर से रिद्धम के साथ हो रहा था। सभी लोग झालर बजने का इन्तजार करने लगे। झालर के लाभार्थी पूज्यश्री के आदेश की प्रतीक्षा करने लगा। और ठीक 10.59 मिनट पर पूज्यश्री ने उच्च स्वर से सात बार मंत्रोच्चारण करके वासचूर्ण मूलनायक परमात्मा पर निक्षिप्त किया। मुद्राऐं की। और उसी समय झालर बज उठी। वाजिंत्र उद्घोष करने लगे। संगीतकार कश्यप की मधुर आवाज गूंजने लगी।

जय जयकार से आकाश गूंजायमान हो उठा। पूज्यश्री ने जिन बिंबों की प्रतिष्ठा के बाद ध्वजदंड व स्वर्णकलश की प्रतिष्ठा की। तत्पश्चात् नीचे पधार कर दादा गुरुदेवों व देवी देवताओं की प्रतिष्ठा की। और उसके बाद चला घंटे भर का परमात्म-भक्ति का विशेष कार्यक्रम!

संगीतकार भक्ति गीतों से झुमा ही रहा था। कि पूज्यश्री ने अपने मधुर कंठ से सदाबहार भजन गाने प्रारंभ किये। आज म्हारां देरासर मां, रंगे रमे आनंदे रमे, झीणो झीणो उडे रे गुलाल इन गीतों के बाद जब पूज्य ने 'चौसठ योगिनी रे नाचे दादा रे दरबार' गीत प्रारंभ किया तो कोई व्यक्ति ऐसा न रहा होगा जो भक्ति में थिरका न होगा! मगन होकर नाचा न होगा। और तभी देखा- बहुत धीमी गति से मेघराजा का आगमन हुआ। और अपनी ओर से आदर की अंजली अर्पण करके दो तीन मिनट बाद विदा हो गया। क्या अद्भुत चमत्कार था! ठीक मुहूर्त्त के समय बरसात का आगमन!

बाद में परमात्मा का चैत्यवंदन किया गया। स्थानकवासी महासती कोकिल कंठी डॉ. श्री मधुस्मिताजी महाराज ने परमात्मा की भक्ति में स्तवन गाया। अपने हाथों में अखंड अक्षत लेकर परमात्मा को बधाया गया। प्रार्थना की गई कि जब तक मेरू पर्वत और सूर्य चन्द्र है, तब तक यह प्रतिष्ठा स्थिर रहे। दादा गुरुदेव की वंदना की गई। पूजनीया गुरुवर्या श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ने दादा गुरुदेव का मारवाडी भाषा का मीठा भजन सुनाया।

प्रतिष्ठा के बाद सभा का आयोजन किया गया। सभा में पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा- मुनिसुव्रतस्वामी परमात्मा का यह मंदिर जिस विशाल रूप में निर्मित हुआ है। विशाल कच्छप पर आसीन यह जिन मंदिर आने वाले समय में तीर्थ का विशिष्ट स्वरूप धारण करेगा। इस तीर्थ के लिये शनिवार और सोमवार महत्वपूर्ण दिन है। शनिवार को मुनिसुव्रतस्वामी परमात्मा का जाप और सोमवार को दादा गुरुदेव की आराधना!

स्थानकवासी श्रमण संघ के सुप्रसिद्ध महासती डॉ. श्री मधुस्मिताजी म. ने मराठी भाषा में प्रवचन देकर जनता को परमात्मा की भक्ति में भिगो दिया। उन्होंने कहा- कोई एक घर की ज्योति होती है, कोई एक गांव की! पर हमारे साध्वीजी महाराज तो विश्व की ज्योति है। निश्चित ही उन्होंने ऐतिहासिक कार्य किया है। उन्होंने कहा- मंदिर ही हमारी संस्कृति के रक्षक हैं... प्राण हैं। विहार धाम का यह निर्माण अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। साध्वी विश्वज्योतिश्रीजी के प्रति मेरा प्रेम भाव है। उनके आत्मीय आग्रह को स्वीकार कर परमात्मा की प्रतिष्ठा में मेरा आना हुआ। मुझे अत्यन्त धन्यता का अनुभव हुआ। पूज्य उपाध्याय प्रवर के दर्शन हुए। उन्होंने पूज्य उपाध्यायश्री को कामली अर्पण की।

पूजनीया गुरुवर्या श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. ने पूज्य गुरुजनों की कृपा का वर्णन किया। अपनी गुरु परम्परा का स्मरण करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता... वंदना प्रस्तुत की। दादावाडी निर्माण का इतिहास सुनाया। अपने अन्तर की स्फुरणाओं की अभिव्यक्ति श्रवण कर सारी जनता भावुक हो उठी। उन्होंने कहा- महासती श्री मधुस्मिताजी ने यहाँ पधार कर कृपा की है। और संघ व समाज को जैन एकता का दिव्य संदेश दिया है।

श्री संघवी विजयराजजी डोसी ने पूज्यश्री की यशोगाथा का गुणगान किया। उन्होंने कहा- पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ने छोटी उम्र में बहुत विराट् कार्य किया है।

आज पूज्य गुरुदेवश्री एवं गुरुवर्या विरागज्योतिश्रीजी म. एवं जिनज्योतिश्रीजी म. के आर्यंबिल तप की आराधना थी। वैसे पिछले दो महिनों से पूजनीया विरागज्योतिश्रीजी म. एवं जिनज्योतिश्रीजी म. एकांतर आर्यंबिल तप की आराधना कर रहे हैं। एक दिन विराग महाराज करते हैं तो दूसरे दिन जिनज्योति महाराज! आर्यंबिल तप की आराधना का भी यह प्रभाव रहा कि परमात्मा का यह विशाल प्रसंग आनंद मंगल के साथ परिपूर्ण हुआ।

दोपहर में अष्टोत्तरी शांतिस्नात्र महापूजन पढाया गया। जीवदया की टीप की गई। विनय स्वरूप पूज्यश्री का गुरुपूजन किया गया। कृतज्ञता स्वरूप कामली ओढाई गई।

ता. 19 जून 2014

प्रात: द्वारोद्घाटन! सूर्योदय हुआ ही था। बडी संख्या में भक्त गण आ पहुँचे थे। श्री नितिन भाई कर्णावट ने यह लाभ लिया था। पूज्यश्री ने पुजारी आडो खोल तथा द्वार खोलो नितिन भाई मंदिर ना! भजन गाये। परमात्मा से दर्शन प्रदान करने की प्रार्थना की गई। अणुजाणह का मंत्र बोला गया। और जय जयकार के उद्घोष के साथ द्वार खोला गया। अष्टप्रकारी पूजा की गई। चैत्यवंदन किया गया। भक्ति की गई। दादा गुरुदेव के इकतीसे का सामूहिक पाठ किया गया। वंदना की गई। सतरह भेदी पूजा व दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

सब ने हाथ जोड कर क्षमा मांगी! हे परमात्मन्! हम भूलों से भरे हैं। हमारी गल्तियों के लिये हमें क्षमा करना देव! अपना आशिष देना! हमारी भक्ति के बदले हम आपसे कुछ मांगना चाहते हैं। क्या

करें! मांगने की आदत जाती नहीं! भगवन्! भक्ति के बदले हमें और कुछ नहीं चाहिये! मोक्ष चाहिये... और जब तक मोक्ष न मिले, तब तक आपका शासन चाहिये... आपकी वाणी चाहिये... आपका दर्शन और पूजा चाहिये!

मूलनायक परमात्मा की दिव्य प्रतिमा

नाशिक की इस दादावाडी में मूलनायक के रूप में मुनिसुव्रतस्वामी भगवान को बिराजमान करने का निश्चय किया गया था। परमात्मा की प्रतिमा श्याम वर्ण की होनी चाहिये। श्याम वर्ण का पाषाण भेंसलाना का उपलब्ध होता है। पर उसमें प्राय: सफेद बिन्दु निकल आते हैं। इसके लिये तय किया गया कि उत्तम कोटि का कसौटी तुल्य गहन श्याम वर्ण का दिव्य पाषाण बेल्जियम से मंगवाया जाये। इसके लिये हमने नगर निवासी श्री उत्तमचंदजी बरमेशा से संपर्क किया।

वे परमात्मा की भक्ति में बहुत रस लेते हैं। उन्होंने अनुभव किया कि परमात्मा की भक्ति का यह अनूठा अवसर मिला है। उन्होंने अपने संपर्कों से पाषाण मंगवाने की पूरी तैयारी कर ली। फरवरी में आर्डर दिया गया था। अप्रेल महिना पूरा होने का था। पर पाषाण भारत नहीं आ पाया था। कुछ समस्याऐं थी। कानूनी अडचनें थी। हमने प्रार्थना की, परमात्मन् आपको ही बिराजमान करना है... आपको ही बिराजमान होना है। आपको पधारना ही होगा। और मई महिने के तीसरे सप्ताह में समाचार मिला कि पाषाण मुंबई आ गया है। उसके बाद मेहनत की चितलवाना निवासी श्री पारसमलजी मुथा ने!

परमात्मा का चमत्कार और उत्तमचंदजी व पारसमलजी का पुरूषार्थ! जून महिने की 4 तारीख को पाषाण जयपुर पहुँच गया। दिव्य दर्शन आर्ट के शिल्पकार कैलाशजी शर्मा ने मात्र चार दिन लिये! और चार दिनों में परमात्मा की दिव्य प्रतिमा का घडन कर लिया। वह शिल्पकार मूर्तिकार भी नहीं समझ पाया कि अमूमन महिने भर में तैयार होने वाली प्रतिमा चार दिनों में कैसे बन गई! यह महिमा परमात्मा की... दादा गुरुदेव की! और उस प्रतिमा का मंगल प्रवेश अन्य सभी प्रतिमाओं के साथ 11 जून 2014 को हो गया।

समाचार दर्शन

42 वां दीक्षा दिवस मनाया गया

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. का 42वां दीक्षा दिवस नाशिक आडगांव स्थित कान्ति मणि नगर में ता. 19 जून 2014 को मनाया गया। इस उपलक्ष्य में विशाल सभा का आयोजन किया गया।

सभा को संबोधित करते हुए पूज्य गुरुदेवश्री ने फरमाया- आज मेरी मां, बहिन एवं मेरा दीक्षा दिवस है। हम तीनों की दीक्षा वि. सं. 2030 आषाढ वदि 7 ता. 23 जून 1973 को पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में पालीताना में हुई थी। मेरी दीक्षा मेरी मां की कृपा से हुई। मेरे पिताजी के असामयिक स्वर्गवास के बाद मेरी मां का मन इस असार संसार से उठ गया था। उसके मन में अपना यह अनमोल जीवन सार्थक करने का तीव्र भाव उमडा। मैं उस समय बहुत छोटा था, मेरी बहिन मुझसे साढे तीन साल छोटी! मैं संयम की मर्यादा और उसका अर्थ क्या समझ पाता! बस मेरे मन में एक ही बात थी कि मां ने कहा है कि दीक्षा लेनी है तो लेनी ही है।

मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे ऐसी मां मिली। मुझे सच्चा प्यार करने वाली मां मिली। जिसने मुझे संसार में नहीं भेज कर संयम की महिमा सिखाई। और ऐसी बहिन मिली। यदि बहिन साथ में दीक्षा नहीं लेती तो मेरी दीक्षा संभव नहीं होती। क्योंकि उसे छोडकर दीक्षा हो नहीं पाती।

मैं आज अपनी प्यारी मां के श्रीचरणों में वंदना करता हूँ। मैं अपने आपको भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे चारित्र मिला... संयम मिला...। आज यह जो जाहोजलाली है... वंदनाऐं हैं, यह मेरी विद्वत्ता को नहीं है। विद्वत्ता तो और भी बहुत लोगों में होती है। ये वंदनाऐं चारित्र को है। मैं संयम की महिमा का चिंतन करता हूँ तो परमात्मा के प्रति अहोभाव से भर जाता हूँ।

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की अजस्र कृपा का ही परिणाम है कि मैं शासन सेवा के योग्य हो सका। मुझे अपने जीवन में श्री संघ का बहुत अपनत्व मिला, उसी अपनत्व के सहारे मैं गतिमान् हो रहा हूँ।

आज का दिन मेरे लिये चिंतन का दिन है कि 41 वर्ष संयम के पूर्ण हुए हैं। 42वें वर्ष में प्रवेश हुआ है। संयम के लक्ष्य के प्रति मैं कितना आगे बढा!

पूजनीया गुरुवर्या साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. ने कहा- कुछ लोगों के पास व्यक्तित्व होता है, पर अस्तित्व नहीं। कुछ के पास अस्तित्व होता है, पर प्रभुत्व नहीं। कुछ के पास प्रभुत्व होता है, पर कृतित्व नहीं। कुछ के पास कृतित्व होता है, पर कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जिनके पास व्यक्तित्व, अस्तित्व, प्रभुत्व, कृतित्व, वक्तृत्व और नेतृत्व ये सारे गुण मौजूद होते हैं। हमारे पूज्य गुरुदेवश्री ऐसे ही विशिष्ट व्यक्तित्व है।

सभा का संचालन पूजनीया गुरुवर्या श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ने भावप्रवण शेर और शायरी के साथ किया। उन्होंने फरमाया- आपका चुंबकीय व्यक्तित्व ऐसा अनूठा है कि जो व्यक्ति आपके श्रीचरणों में आता है, आप उसके हृदय में बिराजमान हो जाते हैं। छोटी उम्र में संयम लेकर आपने शासन प्रभावना का जो इतिहास बनाया है, वो बडे बडे आचार्य नहीं कर पाते हैं। आपने अभी तक 140 अंजनशलाकाऐं प्रतिष्ठाऐं कराई हैं। दीक्षा कराने का आपका ढंग अत्यन्त निराला है। आप वक्ता हैं। आपका प्रवचन आत्म-चिंतन की गहराईयों से परिपूर्ण होता है। आप लेखक हैं, कवि हैं। आपने कितनी ही पूजाओं की रसभरी रचना की है तो कितने ही भजन लिखे हैं। आपके गुणों का वर्णन करना संभव नहीं है।

पूजनीया साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म.सा. ने कहा- आज मेरे दीक्षा दाता गुरुदेवश्री का दीक्षा दिवस हैं। मुझे दीक्षा प्रदान कर आपने मुझ पर अनंत उपकार किया है। आज के दिन आपसे यही प्रार्थना है कि मुझे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि मेरी संयम आराधना साधना अच्छी तरह से चलती रहे और मैं अपने जीवन में आगे बढ सकूं।

सौ. सविता नितिन कर्णावट ने कहा- आपश्री खरतरगच्छ के चमकते दिव्य सितारे हैं। आपकी समझाने की कला इतनी अनूठी है कि गहरी से गहरी बात सरलता से श्रोता के दिलोदिमाग में उतर जाती है।

डहाणुं से पधारे चन्द्र कुशल महिला मंडल के सौ. सुनीता बाफना ने कहा- पूज्यश्री यथानाम तथागुण हैं। उनका सांसारिक नाम मीठालाल था। आपका नाम मीठा, आपकी वाणी मीठी, आपकी मुद्रा मीठी, आपकी करनी मीठी है।

श्री धनंजय जैन ने गुरुवर महान् गीत प्रस्तुत किया। सौ. प्रीति महावीर जैन ने पूज्य गुरुदेवश्री का संक्षिप्त परिचय दिया। और यहाँ नाशिक पधार कर दादावाडी की प्रतिष्ठा का जो इतिहास बनाया है, उसके लिये कृतज्ञता अर्पित की।

दादावाडी के महामंत्री श्री रमेश नीमाणी ने कहा- मैंने आपके सबसे पहले दर्शन पूना में किये थे। उसके बाद तो दादावाडी के कारण कितनी ही बार पूज्यश्री का सानिध्य मिला। पूज्यश्री के मार्गदर्शन से ही दादावाडी का सपना साकार हुआ है।

दादावाडी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखरजी सर्राफ (कवाड) ने कहा- नाशिक में आपकी कृपा से ही दादावाडी बनी.. और प्रतिष्ठा का आशातीत चमत्कारों से परिपूर्ण वातावरण बना, वह केवल और केवल आपकी कृपा का ही परिणाम है। आपका आशीर्वाद हम पर सदा सदा बरसता रहे।

इस अवसर पर पधारे मुमुक्षु कुमारी शिल्पा बालड एवं मुमुक्षु कुमारी कल्पना का संस्थान की ओर से अभिनंदन किया गया।

पूज्यश्री के दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में श्री नितिनजी सविताजी कर्णावट, नाशिक रोड वालों की ओर से गरीबों में वस्त्र वितरित किये गये।

चातुर्मास प्रवेश संपन्न

समाचार दर्शन

नवसारी

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक बकेला पार्श्वनाथ तीर्थ प्रेरक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म. का चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश अपने शिष्य पूज्य युवा मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. के साथ नवसारी नगर में ता. 2 जुलाई 2014 बुधवार को ठाटबाट के साथ संपन्न हुआ। उनका चातुर्मास नवसारी बाडमेर श्री संघ के तत्वावधान में श्री मणिधारी भवन में होने जा रहा है। इस अवसर पर बडी संख्या में गुरु भक्तों की उपस्थिति थी।

शोभायात्रा के पश्चात् सभा को संबोधित करते हुए पूज्यश्री ने कहा- चातुर्मास में हमें आराधना से जुड कर जीवन जीने की कला का बोध प्राप्त करना है। चातुर्मास के बाद स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बडी संख्या में गुरुभक्त बाहर से पधारे।

अहमदाबाद

पूज्य मुनिराज श्री जयानंदमुनिजी म. के शिष्य रत्न पूज्य मुनि श्री कुशल मुनिजी म. आदि ठाणा 4 एवं पूजनीया प्रखर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा 8 का चातुर्मास प्रवेश अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ ता. 29 जून 2014 को संपन्न हुआ।

प्रवेश शोभायात्रा में बडी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए। पूज्यश्री ने अपने प्रवचन में आराधना द्वारा चातुर्मास को सफल बनाने का उपदेश दिया।

दिल्ली

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश ता. 29 जून को दिल्ली में अत्यन्त उल्लास भरे वातावरण में संपन्न हुआ। शोभायात्रा का प्रारंभ दिगम्बर जैन लाल मंदिर से हुआ, जो चांदनी चौक, किनारी बाजार, चीराखाना होता हुआ खरतरगच्छ भवन पहुँचा। धर्मसभा को पूजनीया गुरुवर्याश्री सुलोचनाश्रीजी म., श्री सुलक्षणाश्रीजी म., प्रीतियशाश्रीजी म., प्रियकल्पनाश्रीजी म. ने संबोधित किया। मुमुक्षु संयम सेठिया, चेन्नई ने भावभरा स्तवन गाया।

खरतरगच्छ जैन समाज की ओर से श्री हीरालालजी मुसरफ ने अभिनंदन किया। बाडमेर संघ-दिल्ली की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। पूजनीया साध्वी तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश 6 जुलाई 2014 को छोटी दादावाडी में होगा।

गदग

पूजनीया गुरुवर्या श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश ता. 29 जून को श्री जैन मरूधर संघ हुबली में अत्यन्त उल्लास भरे वातावरण में संपन्न हुआ। शोभायात्रा का प्रारंभ मधुवन सोसा. से हुआ। जो महाजनवाडी में धर्मसभा में परिवर्तित हुयी। पूजनीया साध्वीश्री ने चातुर्मास का महत्व समझाते हुए आराधना के साथ तपस्या से जोडने का उपदेश दिया।

नंदुरबार

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास नंदुरबार में होने जा रहा है। उनका चातुर्मास प्रवेश ता. 4 जुलाई 2014 को विशाल शोभायात्रा के साथ संपन्न हुआ। शोभायात्रा का प्रारंभ श्री अजितनाथ जैन मंदिर से हुआ जो शहर के विभिन्न मार्गों से होती हुई दादावाडी पहुँची जहाँ पूज्याश्री का प्रवचन हुआ। पूज्याश्री ने अपने प्रवचन में चातुर्मास की महत्ता प्रतिपादित करते हुए इस काल को जीवन की विशिष्ट साधना का स्वर्णिम काल बताया। श्री संघ की ओर से कामली ओढाई गई। इस अवसर पर सूरत, मुंबई, शहादा, तलोदा, वाण्याविहिर, खापर, अक्कलकुआं, सेलंभा, सारंगखेडा, खेतिया, दोंडाइचा आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में श्रावक गण पधारे थे।

बैंगलोर

पूजनीया गुरुवर्या महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया गुरुवर्या श्री जितेन्द्रश्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता पूजनीया धवलयशस्वी गुरुवर्याश्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का बैंगलोर बसवनगुडी मंदिर दादावाडी में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश ता. 29 जून 2014 को अत्यन्त उल्लास के साथ संपन्न हुआ। लोग शोभायात्रा में बडी संख्या में उपस्थित थे। आराधना भवन में प्रवचन फरमाते हुए पूजनीया गुरुवर्याश्री ने धर्म आराधना की प्रेरणा दी।

चेन्नई

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या एवं पूजनीया साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. सा. की चरणाश्रिता पूजनीया साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चेन्नई नगर में श्री धर्मनाथ मंदिर में चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश ता. 29 जून को संपन्न हुआ। श्रद्धालु श्रावकों की विशाल उपस्थिति में पूज्याश्री ने धर्म आराधना द्वारा चातुर्मास काल को सफल बनाने का आह्वान किया।

बाडमेर

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या एवं पूजनीया साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता पूजनीया साध्वी डॉ. श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. डी. लिट् आदि ठाणा 4 का बाडमेर नगर में चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश ता. 30 जून 2014 को संपन्न हुआ। शोभायात्रा की भव्यता देखते ही बनती थी। शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरती हुई शोभायात्रा के श्री जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन पहुँचने पर सभा में परिवर्तित हो गई। पूजनीया साध्वीजी भगवन्त ने अपने प्रवचन में चातुर्मास के कर्त्तव्यों का विश्लेषण करते हुए आराधना से जुडने की प्रेरणा दी।

जोधपुर

पूजनीया प्रखर व्याख्यात्री साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया विदुषी साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. पू. दीपमालाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश जोधपुर के गुलाबनगर मंदिर उपाश्रय में ता. 29 जून को संपन्न हुआ। वर्षगांठ होने से जिन मंदिर पर ध्वजा चढाई गई।

मुमुक्षु कुमारी नीलिमा भंसाली ने चातुर्मास को सफल बनाने की प्रेरणा देते हुए भावभरा भजन सुनाया। पूजनीया साध्वीश्री ने चातुर्मास का महत्व समझाते हुए आराधना से जोडने का उपदेश दिया।

मुंबई

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया विदुषी साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म.सा. का चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश मुंबई नगर में श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुंबई के तत्वावधान में अत्यन्त उल्लास के साथ ता. 29 जून को संपन्न हुआ। प्रवेश शोभायात्रा का प्रारंभ विल्सन गली स्थित सांचोर मंदिर से प्रवेश हुआ जो विभिन्न मार्गों से होती हुई विट्ठल वाडी पहुँची। जहाँ पूजनीया साध्वीजी म. का अभिनंदन किया गया।

सादर श्रद्धांजली

- बाडमेर निवासी श्री बाबुलालजी भगवानदासजी बोथरा का स्वर्गवास हो गया। वे कुशल वाटिका के सक्रिय ट्रस्टी रहे। व जहाज मंदिर ट्रस्ट के पूर्व ट्रस्टी थे। स्वभाव से अत्यन्त सरल श्री बोथराजी के स्वर्गवास से गच्छ में कमी हुई। जहाज मंदिर ट्रस्ट की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।
- बाडमेर निवासी श्रावक प्रवर श्री आसुलालजी जैन का देहावसान हो गया। श्री आसुलाल जी का व्यक्तित्व अत्यंत सरल विनम्र और स्पष्ट वादी था। जैन साहब दादा श्री जिनकुशल सूरि ट्रस्ट, बरमसर के कर्मठ ट्रस्टी थे। बरमसर तीर्थ के विकास के लिये बहुत मेहनत की थी। जहाज मंदिर परिवार आपको हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित करता है।

रिजुबालिका में दीक्षा व प्रतिष्ठा संपन्न

परमात्मा महावीर की केवलज्ञान कल्याणक भूमि श्री रिजुबालिका तीर्थ में पूजनीया मरूधर ज्योति श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से नवनिर्मित श्री महावीर स्वामी केवलज्ञान मुद्रा मंदिर में परमात्मा महावीर स्वामी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 25 जून 2014 को विशाल जनसमूह की पावन उपस्थिति में संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा महोत्सव को पूज्य मुनिराज श्री पीयूषसागरजी म. आदि ठाणा, पूज्य मुनिराज श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया मरूधर ज्योति साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा ने अपनी निश्रा प्रदान की।

प्रतिष्ठा से पूर्व ता. 24 जून को सुश्री कुमारी पूजा बैद की भागवती दीक्षा संपन्न हुई। दीक्षा की प्रारंभिक विधि होने के पश्चात् नूतन साध्वीजी म. का नाम रिजुमनाश्रीजी म. रखा गया। वे पूज्य साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या घोषित की गई।

भिवंडी खरतरगच्छ संघ के चुनाव संपन्न

भिवंडी श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के चुनाव पूज्य मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म. सा. आदि ठाणा एवं पूज्य साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में संपन्न हुए।

पूज्यश्री की प्रेरणा से सर्वसम्मति से श्री पारसमलजी बोहरा हाला वालों को अध्यक्ष चुना गया। इस संघ की स्थापना पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से हुई थी।

श्री भद्दिलपुर तीर्थ प्रतिष्ठा संपन्न

श्री भद्दिलपुर तीर्थ, 12 मई, 2014 : परमात्मा श्री शीतलनाथ जी के च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान भूमि पर करीब 150 वर्ष पूर्व विच्छेदित जैन श्वेताम्बर श्री भद्दिलपुर तीर्थ की 21 वर्ष से पुनर्स्थापना का प्रयास संपन्न हुआ। 12 मई, 2014 तदनुसार वैशाख शुक्ल त्रयोदशी, वि.सं. 2071 को।

जैन श्वेताम्बर कल्याणक तीर्थ न्यास के तत्वावधान में परम पूज्य अध्यात्मयोगी श्री महेन्द्रसागरजी म., श्री मनीषसागरजी म. आदि ठाणा 10 की निश्रा, विदुषी साध्वी श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा 9 का सान्निध्य में श्री शीतलनाथ स्वामी की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। इस तीर्थ की भूमि, उस पर निर्मित जिन मंदिर व धर्मशाला से लेकर प्रतिष्ठा तक का संपूर्ण लाभ बीकानेर / दिल्ली निवासी श्रेष्ठिवर्य श्री हरखचन्दजी नाहटा परिवार ने लिया।

खान्देश प्रवास पूजनीया गुरूवर्याश्री का

प.पू. माताजी म. श्री रतनमाला श्री जी म.सा. एवं परम पूज्या बहिन म. डॉ. श्री विद्युतप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा नवसारी से विहार कर बारड़ोली, मांडवी, उमरपाड़ा होते हुए क्रमशः 16 जून को खापर पहुंचे। खापर संघ ने बड़ी संख्या में उनकी अगवानी करते हुए कहा- हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि हमारे श्रद्धेय गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के माताजी म. एवं बहिन म. हमारे गांव को पवित्र करेंगे।

प्रवेश में श्राविकाओं ने एवं विशेष रूप से बालिकाओं ने खूब उत्साह से भाग लिया। स्थान-2 पर गहुँलियां कर संघ ने अहोभाव से गुरूवर्याश्री को बधाया।

तीन दिन का गुरुवर्या श्री का प्रवास रहा। पू. बहिन म. ने प्रवचन के अन्तर्गत खापर संघ की धर्म आराधना एवं क्रियानिष्ठा की अनुमोदना करते हुए संगठन एवं एकता की प्रेरणा दी।

श्री अशोक कुमार बोथरा के निवेदन पर गुरूवर्या श्री गोशाला पधारे एवं गोशाला में नवनिर्मित दर्शनीय चौमुखजी के दर्शन किये।

यहाँ से गुरुवर्या श्री विहार कर 19 जून को अक्कलकुआ पधारे। आज पू. माताजी म.सा., पू. उपाध्याय श्री एवं बहिन म. का दीक्षा दिवस था। प्रवचन के अन्तर्गत संयम का महत्व समझाते हुए पू. बहिन म. ने कहा- अगर आत्मा शु)ात्मदशा को प्राप्त करना चाहती है तो उसे संयम लेना ही होगा। संयम 'छोड़ना' नहीं 'अपनाना' सिखाता है। समस्त जीवों के अस्तित्व को आत्मवत् अपनाना ही संयम है। संपूर्ण प्राणीमात्र से प्रेम के मार्ग का नाम है संयम! केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद भी जब तक साधुवेश शरीर पर नहीं आता, तब तक वे वंदनीय नहीं होते।

गुरुवर्या श्री बहिन म. ने कहा- हम भाग्यशाली हैं कि हमें बचपन में ही मां ने संयम के संस्कार देकर आत्म कल्याण का रास्ता दिखाया।

महिला मण्डल की ओर से श्रीमती उषाजी ललवाणी एवं हर्षाजी कोचर ने बधाई गीत प्रस्तुत किया। सकल संघ की ओर से भी अजय डागा ने दीक्षा की दिवस की बधाई देते हुए कहा-हमारा संघ आप जैसे प्रतापी गुरूजनों को पाकर अत्यंत गौरव का अनुभव कर रहा है। आपकी आराधना आपका कल्याण तो कर ही रही है पर आप हमारा भी मार्ग दर्शन करके हमें भी आगे बढ़ावें। दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया क्रमशः मासूम ललवानी, श्रुति भंसाली एवं श्रीपाल भंसाली! संघ की ओर से इन्हें पुरस्कार दिया गया।

यहाँ गुरुवर्या श्री तीन दिन विराजे। तीनों दिन प्रवचन में उपस्थिति बहुत सुन्दर रही। प्रवास अपनाने का निवेदन भी हुआ। पर गुरूवर्या श्री को आगे के गांवों में पधारना था। अतः न चाहते हुए भी 21 जून की संध्या को विदाई देनी पड़ी।

वाण्याविहार होते हुए गुरूवर्या श्री तलोदा पधारे। अभी तीन वर्ष पूर्व तलोदा में पू. उपाध्याय श्री के अनुज शिष्य मनितप्रभजी ने चातुर्मास करके स्वाध्याय एवं तप की अंगूठी अलख जगायी थी।

पू. गुरूवर्या श्री बहिन म. ने तलोदा संघ की अनुमोदना करते हुए कहा- जिस छोटे से संघ ने बड़ी संख्या में तप जप की आराधना द्वारा एक इतिहास बनाया था, आज उस संघ में आकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। पू. गुरूवर्या श्री के दार्शनिक एवं अत्यंत सरल भाषा में प्रवचन सुनकर जनता की एक ही आवाज रही कि हमारी प्यास तीन दिन में नहीं बुझ सकती।

हमें तो चातुर्मास दीजिये।

तीनों दिन लगातार दिन भर धर्म चर्चा की कक्षाऐं भी चली। तीनों दिन की क्लास साध्वी श्री विज्ञांजना श्री जी म. ने।

गुरूवर्या श्री ने ता. 25 जून की शाम तलोदा से खेतिया की ओर प्रस्थान किया। विशाल संख्या में उपस्थित श्रावक, श्राविकाओं को देखकर चातुर्मासिक विहार का भ्रम हो रहा था। एक ही नारा था 'लौटकर गुरूवर जल्दी आना'। 27 को प्रातः 16 कि. मी. का उग्रविहार कर खेतिया पधारे।

खेतिया संघ अपनी परंपरा के गुरू भगवंत को पाकर फूला नहीं समा रहा था। कई लोगों का कहना रहा- हमने बाहर आपकी, आपके प्रभाव की एवं आपकी प्रखरता को देखा है। आज आपको अपनी धरती पर पाकर दिव्य आनंद की अनुभूति हो रही है।

आपके एकता के प्रवचनों से प्रभावित होकर स्थानकवासी संघ ने स्थानक में प्रवचन की पुरजोर विनंती की परंतु समयाभाव के कारण आप उसे स्वीकार नहीं कर पाये। यहाँ से विहार कर 29 जून को शहादा पधारे।

सुघोषा घंट के आकार में निर्मित यहां की भव्य मंदिर युक्त दादावाडी के दर्शन कर पू. महाराज श्री अत्यन्त प्रसन्न हुए। तीन दिनों के शहादा प्रवास में हुए उनके प्रवचनों ने एक नई जागृति ला दी।

गुरूवर्या श्री के इस प्रवास में खान्देश में अनूठा उल्लास रहा। इस प्रवास के अन्तर्गत खापर निवासी श्री सुरेशजी बोथरा, श्री बंशीलालजी चौपड़ा श्री मोतीजी भंसाली, श्री अशोक जी बोथरा, श्री सुरेश जी गुलेच्छा, श्री अनोपजी पारख, किशोरजी चौपड़ा, श्री अरविन्द बोथरा, अक्कलकुआं निवासी श्री राजुजी डागा, श्री प्रेमचंदजी गुलेच्छा, श्री मांगीलालजी संखलेचा, श्री रमेशजी कोचर, श्री नरेश जी गुलेच्छा, श्री पारसजी गुलेच्छा, श्री कुशलजी कोचर, तलोदा निवासी श्री कांतिलालजी सेठिया, श्री राजेन्द्रजी सेठिया, श्री घीसुलालजी सेठिया, श्री घीसुलालजी पारख, श्री राजेन्द्रजी कोचर, श्री कांतिलालजी पारख, श्री दिलीपजी सेठिया, श्री धनराजजी कोचर, श्री धनराजजी पारख, खेतिया निवासी श्री गणेशलालजी बाफणा, श्री विनोदजी बाफना, श्री पारसमलजी चौपडा, श्री प्रकाशचंदजी चौपड़ा, शहादा निवासी डॉ. श्री कांतिलालजी टाटिया, श्री प्रदीपजी नाहटा, श्री यश नाहटा, श्री प्रकाशजी नाहटा, श्री सुभाषजी छाजेड़, श्री नंदकिशोरजी कोटडिया आदि का सुन्दर सहयोग रहा।

कांतिलाल टाटिया, अध्यक्ष
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट, शहादा

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित
श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित
श्री जिनकुशल हेम विहारधाम
जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।
निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार
संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

श्रद्धांजली

शेठ श्री श्रेणिकभाई कस्तूर भाई

जैन संघ, समाज तथा वीशा ओसवाल जाति के महामना, अहमदाबाद की श्रेष्ठि-महाजन परंपरा के अग्रणी शेठ श्री श्रेणिकभाई कस्तूर भाई का गुरूवार 19 जून, 2014 को प्रात: 7.35 बजे देहावसान हो गया। उनके देहावसान के समाचार से जैन संघ व समाज को गहरा आघात लगा है।

आप का जन्म 28 दिसम्बर, 1925 को कस्तूरभाई लालभाई परिवार में मातु श्री शारदाबेन की रत्नकुक्षि से हुआ।

श्रेणिकभाई ने सन् 1944 में अमेरिका स्थित विश्व के प्रसिद्ध तकनीकी-विज्ञान संस्थान 'मासाट्यूयेट्स इंस्टीच्यूट ऑफ टैक्नॉलाजी' (एम.आई.टी.) में प्रवेश लिया और बी.एस. की उपाधि प्राप्त की। तदुपरांत आप ने दूसरे विश्वविख्यात हावर्ड विश्वविद्यालय से एम.बी.ए. किया।

व्यावहारिक शिक्षा पूरी करने के बाद आप ने अपने पिता जी शेठ श्री कस्तूरभाई के संरक्षण में 'लालभाई समूह' की विभिन्न कंपनियों प्रबंधन व लेखाकार्य संभाला।

आप अहमदाबाद एज्यूकेशन सोसायटी, एल.डी.इंस्टीच्यूट ऑफ इंडॉलॉजी, गुजराती विश्वकोश ट्रस्ट आदि अनेक शैक्षणिक, धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं के प्रमुख अथवा ट्रस्टी के रूप में बरसों तक अपनी सेवायें दीं। प्राय: यह देखा जाता था कि समाज व संघ के लोग केवल उनका नाम अपनी संस्था के साथ जोड़ कर गौरव का अनुभव करते थे। ऐसे लोगों के आग्रह को श्रेणिकभाई बड़ी ही अनिच्छा पूर्वक, पर संघ का सम्मान रखते हुए स्वीकार करते थे।

जैन समाज की 287 वर्ष पुरानी प्राणवान् संस्था आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी के 32 वर्ष तक प्रमुख के रूप में आप ने अपनी सेवायें दीं। एल.डी.इंस्टीच्यूट ऑफ इंडॉलॉजी संस्था को प्राणवान्, प्रतिष्ठित और विश्वविख्यात बनाने में आप का सिंह-पराक्रम रहा।

आप के स्वयं के हाथों जितने सत्कार्य हुए, उससे कहीं अधिक कार्य आप द्वारा स्थापित और संचालित संस्थाओं द्वारा किये गये।

नम्रता, सरलता, उदारता पूर्ण गंभीर व्यक्तित्व, छोटी से छोटी बात को भी पूरी गंभीरता से ग्रहण करना, वस्तु एवं परिस्थिति को समझने की पारखी नजर जैसे अनेक गुण उनके व्यक्तित्व में समाये हुए थे। इन सबके साथ ही वे समाज के साधु-संत एवं आचार्यों, देश-विदेश के राजनीतिज्ञों, राज्याधिकारियों, समाज सेवकों, श्रेष्ठि-समूहों और उद्योगपतियों में वे समान रूप से लोकप्रिय थे और आदर-सम्मान प्राप्त करते थे। जैन संघ के महत्वपूर्ण प्रश्नों को हल करने में आप की सूझबूझ, कार्य करने की शैली तथा सबको साथ लेकर कार्य करने के स्वभाव के कारण आप का महत्वपूर्ण योगदान रहता था। आप की सादगी न केवल आप के वस्त्रों में, अपितु आप के समूचे व्यक्तित्व में झलकती थी।

विनम्रता आप के जीवन में जन्मजात रही।

जहाज मंदिर की प्रतिष्ठा के अवसर पर आदरणीय भाईजी श्री हरखचंदजी नाहटा की प्रेरणा से आपको जिन शासन रत्न अलंकरण प्रदान किया था। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

बल्लारी में नूतन जिन मंदिर एवं दादावाड़ी का खनन मुहूर्त एवं शिलान्यास समारोह

प.पू. मरूधरमणि उपाध्यायप्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. की प्रेरणा व प.पू. मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. व स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा निश्रा में संगनकल रोड (मौका रोड) बल्लारी में ता. 16.06.2014 को भूमि पूजन एवं खनन मुहूर्त बड़े आनंद उल्लास के साथ हुआ। ता. 18.6.2014 को भगवान सीमंधर स्वामी जिनालय, अनंत लब्धि निधान गुरु गौतम स्वामी व प्रत्यक्ष प्रभावी दादा गुरुदेव श्री जिन कुशल सूरि दादावाड़ी का शिलान्यास भारी हर्षोल्लास व सैकड़ो जैन भाईयों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। -बल्लारी श्री जैन संघ

समाज गौरव अलंकरण सम्पन्न

बाड़मेर में 15 जून 2014, रविवार को होटल कैलाश इन्टरनेशनल में जैन परिवार के 14 वें वार्षिक स्थापना समारोह के उपलक्ष में समाज गौरव अलंकरण व सम्मान समारोह संपन्न हुआ।

जैन परिवार के संपादक लूणकरण सिंघवी ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आज प्रत्येक समाज की प्रगति में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

समारोह में जैन परिवार 'पाक्षिक' के 64 पृष्ठीय बहुरंगी स्थापना दिवस विशेषांक का अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। इस अवसर पर गुजरात सरकार के श्रम कल्याण बोर्ड के चैयरमेन सुनील सिंघी, विधायकश्री मेवारामजी मालु, श्रीमती उषा जैन भी उपस्थित थे। सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट सेवाऐं देने वाले देश के समाजसेवी भंवरलाल नाहटा पाली, प्रकाशचन्द्र संघवी अहमदाबाद, देवराज खीवसरा दिल्ली, बाबुलाल डोडिया गांधी अहमदाबाद, अमृतलाल कटारिया सिंघवी मुम्बई, मांगीलाल गांधी मेहता धुम्बड़िया-मुम्बई एवं श्रीमती बदामीदेवी घीया को समाज गौरव अलंकरण से नवाजा गया। समारोह में मुम्बई, अहमदाबाद आदि कई नगरों से व्यक्तियों भाग लिया।

नेत्र शिविर में 30 लोगों का ऑपरेशन

महावीर इन्टरनेशनल चैन्ने मेट्रो द्वारा 656 वे नेत्र शिविर का आयोजन गुलेछा ट्रस्ट के. के. नगर के सहयोग से दि. 20.6.14 शुक्रवार को ''महावीर छल'' के प्रांगण में किया गया। भवरलालजी गुलेछा की याद में कराये गये इस शिविर में डॉ. अग्रवाल आई हॉस्पीटल के डॉक्टरों की टीम द्वारा 75 लोगों के आंखों की जांच की गयी। 30 लोगों को नि:शुल्क ऑपरेशन हेतु डॉ. अग्रवाल हॉस्पीटल में भर्ती करवाया गया। कार्यक्रम के दौरान आइ केम्प चेयरमैन प्रकाश गुलेछा ने शिविर में आये लोगों को स्वस्थ जीवन के लिए शाकाहार अपनाने की प्रेरणा दी तथा आंखों की सुरक्षा के लिए हरी सब्जियों का सेवन करने के लिए कहा। कार्यक्रम को सफल बनाने में गौतम गुलेछा, प्रवीन जैन, प्रकाश गुलेछा, सेतवम, लक्ष्मी, प्रेमचन्द गुलेछा, रनजीत जैन का सहयोग रहा।

पादरा दादावाड़ी ध्वजारोहण संपन्न

पादरा नगर की धन्यधरा पर नवनिर्मीत दादावाड़ी की चतुर्थ ध्वजारोहण दादावाड़ी परिसर में सुबह 8 बजे प्रक्षाल पूजा से शुरू हुआ। तत्पश्चात सामुहिक केसर पूजा रखी गई थी। 10 बजे दादा साहेब की बड़ी पूजा भाईओं और बहनो के साथ स्थानिक भक्त मंडल ने पढ़ाई। 11.45 के शुभ मुर्हूत पर पूण्याहं... प्रियंताम् की गुंज के साथ दादावाड़ी की मुख्य शिखर की अमर ध्वजा का आरोहण श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, सांचोर वालों ने किया।

इस मंगलकारी कार्यक्रम में सांचौर संघ के राजमलजी श्रीश्रीश्रीमाल पारसमलजी, बड़ौदा खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष श्रीमान नरेशजी पारख, जशवंतजी पारख, पदमचंदजी गोलेच्छा, मनीषभाई गोलछा, अनीलभाई झाबक, दीपक भाई झाबक, अमीत सालेचा, नरेन्द्रभाई झाबक, जयेशभाई झाबक, कमलेशभाई झाबक एवं पादरा जैन संघ के अध्यक्ष श्रीमान बचुभाई शाह, विजयभाई शाह, जयेशभाई शाह और कायमी ध्वजा के लाभार्थी परिवारों समेत सेंकडों गुरू भक्तों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

प्रेषक अमित शाह-बड़ौदा

शाजापुर में दादावाड़ी प्रतिष्ठा

मालवा के शाजापुर नगर में प्राचीन दादाबाड़ी का जीर्णोद्धार सह दादाबाड़ी की पुन: प्रतिष्ठा समारोह पूज्या साध्वीजी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा-11 की पावन निश्रा में ता. 18.4.2014 वैशाख वदि 2 को अत्यंत हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई।

सुरम्य नूतन दादा जिनकुशलसुरिजी कि प्रतिमा, प्रथम दादा श्री जिनदत्तसुरिजी एवं मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरिजी को विराजमान करने का लाभ शाजापुर निवासी श्री इन्द्रमलजी-दाखुबाई पुत्र श्री ज्ञानचंदजी, सचिनकुमारजी भंसाली परिवार ने लिया।

दादा श्री जिनकुशलसूरिजी एवं चतुर्थ दादा श्री जिनचंद्रसूरिजी को विराजमान करने का लाभ क्रमश: लोकेन्द्रजी, सौरभकुमारजी नारेलिया शाजापुर, श्री सुगनचंद, राजेशकुमार, आनन्दकुमार, अभिषेक अरिहंत बरडिया, चेन्नई-शाजापुर परिवार ने लिया। प्रतिष्ठा समारोह कार्यक्रम विधिकारक शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी हरण के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

प्रेषक: सुगनचंद बरडिया

पाली में गुणानुवाद

पाली में 5 जून 2014 को सुप्रसिद्ध व्यख्यात्री पूज्या हेमप्रभाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी विनीतप्रज्ञाश्रीजी म.सा. की सातवीं पूण्यतिथी खरतरगच्छ उपाश्रय लोढ़ा बास, पाली में मनाई गयी। गुणानुवाद सभा में पाली शहर के कई गणमान्य जन उपस्थित हुऐं। परम पूज्य सुदीर्घ संयमी विनोदश्रीजी म.सा. एवं विनयप्रभा श्रीजी म.सा. एवं मनोरंजना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में सम्पन्न हुई। साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म. ने कहा कि गुणवर्या गुणों की भण्डार थी, उनकी आकृति में सौम्यता, प्रकृति में सरलता एवं कृति में कल्याण भावना थी। साध्वी योगांजनाश्रीजी म. ने कहा कि गुरुवर्या में सहजता, सरलता और निरभिन्नता थी। साध्वी सिद्धोदयाश्रीजी म. ने कहा- महापुरुषों का जीवन यही बात सिखलाता हैं, जो करता हैं सतत् परिश्रम, वही महान बन जाता हैं।

साध्वी प्रमुदिताश्रीजी म. ने गुणानुवाद का अर्थ बताया कि गुरु के गुणों को जानकर उनका अनुसरण करें और उनको अपने जीवन में लाने का प्रयास और पुरुषार्थ करें।

साथ ही संघ के अध्यक्ष श्री गौतमचंदजी डाकलिया, रतनलालजी लसोड़ स्थानकवासी श्रावक संघ अध्यक्ष, मोहनलालजी तलेसरा साधुमार्गी श्रावक संघ, चैनराजजी मेहता जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पूर्व अध्यक्ष पारसमलजी धारीवाल अनुभव स्मारक, सज्जनराजजी कटारिया, खेतमलजी वडेरा, भुपेन्द्रभाई, मुमुक्ष मीना छाजेड़, शान्तिनाथ महिला मण्डल, मंजूजी भंसाली, अमृतलालजी कटारिया बालोतरा आदि ने अपने शब्दों के माध्यम से गुणानुवाद किया। कार्यक्रम का संचालन धीरज कुमार छाजेड़ और सम्पतजी संकलेचा ने किया। दोपहर को आयम्बिल तप एवं नवानु प्रकार की पूजा व सामुहिक सामायिक नवकार मंत्र का जाप रखा गया।

'परमात्मा बनने की कला' का विमोचन सम्पन्न

अहमदाबाद स्थित दादा साहेब का पगला प्रांगण में पूज्य मुनिराज कुशल मुनिजी म.सा. के पावन निश्रा में एवं साध्वीवर्या श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में परमात्मा बनने की कला पुस्तक का विमोचन 25 जून को सम्पन्न हुआ।

पुस्तक का विमोचन संघ के प्रमुख शेरमलजी मालू, वंशराजजी भसांली, रतनलालजी हालावाला, भूपतजी कांठेड, पारसमलजी भंसाली द्वारा किया गया। पुस्तक की विशिष्ठता- प्रथमसुत्र पापप्रतिघात गुणबीजाधान की परिभाषा बताकर संसार दुख रूप, दुख फलक, दुखानुबंध है इत्यादि जानकर संसार के प्रति वैराग लाये।

जहाज मंदिर पहेली-97 का सही उत्तर

प्राचीन नाम	नया नाम	प्राचीन नाम	नया नाम
1. कर्णावती	अहमदाबाद	9. उज्जयन्त गिरी	गिरनार
2. पादलिप्तपुर	पालीताना	10. गजपुर	हस्तिनापुर
3. अपापापुरी	पावापुरी	11. भीम पल्ली	भीलडियाजी
4. चित्रकूट	चित्तौड़	12. प्रह्लादनपुर	पालनपुर
5. सत्यपुर	सांचोर	13. विनीता	अयोध्या
6. अर्बुदाचल	आबू	14. अजयमेरू	अजमेर
7. अणहिलपुर पतन	पाटण	15. जावालिपुर	जालोर
8. धवलक्कपुर	धोलका	16. उज्जयिनी	उज्जैन
17. वर्धमान	वरमाण	18. हेमकूट	हम्पी

पुरस्कार विजेता

विनीता बच्छावत-फलोदी

प्रेरणा पुरस्कार- सरसलता जैन-दिल्ली, भूरचंद मालू जोधपुर, मधु खवाड़-मदनगंज, सीमा जैन-जयपुर, किरण बैद मुथा-रायपुर, मनोहरलाल झाबक

इनके उत्तर पत्र त्रुटिरहित थे-मुनि विरक्त प्रभसागरजी, मुनि श्रेयांस प्रभसागरजी

इनके उत्तर पत्र व आंशिक रूपेण त्रुटिपूर्ण थे- सुशीला जी रावलाक जोधपुर, रमेश प्रजापत-धानेरा, मनीला पारख-जयपुर, सुचित्रा भंसाली-नोएडा, संगीता गोलच्छा-कोण्डा गांव, नीरज जैन- उदयपुर, जयश्री कोठारी-ऊटी, भवरी देवी गोलछा-ऊटी, शकुंतला कांकरिया-हैदराबाद, सुशीला भण्डारी-कोटा, लीलाभूरट-होस्पेट, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, नमिता जैन-उदयपुर, निर्मला जैन-उदयपुर, स्नेहलता चौरडिया-जयपुर, पिस्ता गोलछा-जयपुर, आशा छाजेड़-जोधपुर, भंवरलाल संकलेचा-अक्कल कुवा, चन्द्रसिंह जैन-उदयपुर, संतोष भण्डारी-कोटा, निध्यान गुलेच्छा-जोधपुर, मनीषा लूणिया-ऊटी,

पहेली-96 के विलम्ब से प्राप्त उत्तर पत्र- कंचनदेवी कोचर-अक्कलकुवा, सुन्दरीबाई राखेचा-त्रिची, मिनाक्षी संकलेचा-अक्कलकुवा, भाग्यवंती नाहटा-शहादा, मानसी पारख-फलौदी, भारती चौपड़ा-उज्जैन, खुशी चौपड़ा-बालोतरा, मांगीलाल बोहरा-तलोदा, सरिता जैन-बाड़मेर। आरती जैन-तलोदा, रीटा कवाड-अहमदाबाद, शांति देवी पारख-धमतरी, रिखबचंद-भायन्दर पहेली 95 के विलम्ब से प्राप्त उत्तर पत्र भंवरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, सुन्दरी बाई राखेचा-त्रिची मदनचंद कोचर-अक्कलकुवा किरण बैद मुथा-रायपुर भूरचंदमालू-जोधपुर।

तत्त्व परिक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 99

प्रस्तुत बॉक्स में नवकारसी से लगाकर 30 प्रकार के तप दिये गये हैं। उदाहरणार्थ 'नवकारसी' दिया गया है। 29 में से कम से कम 25 तप के नाम अंकित कीजिये।

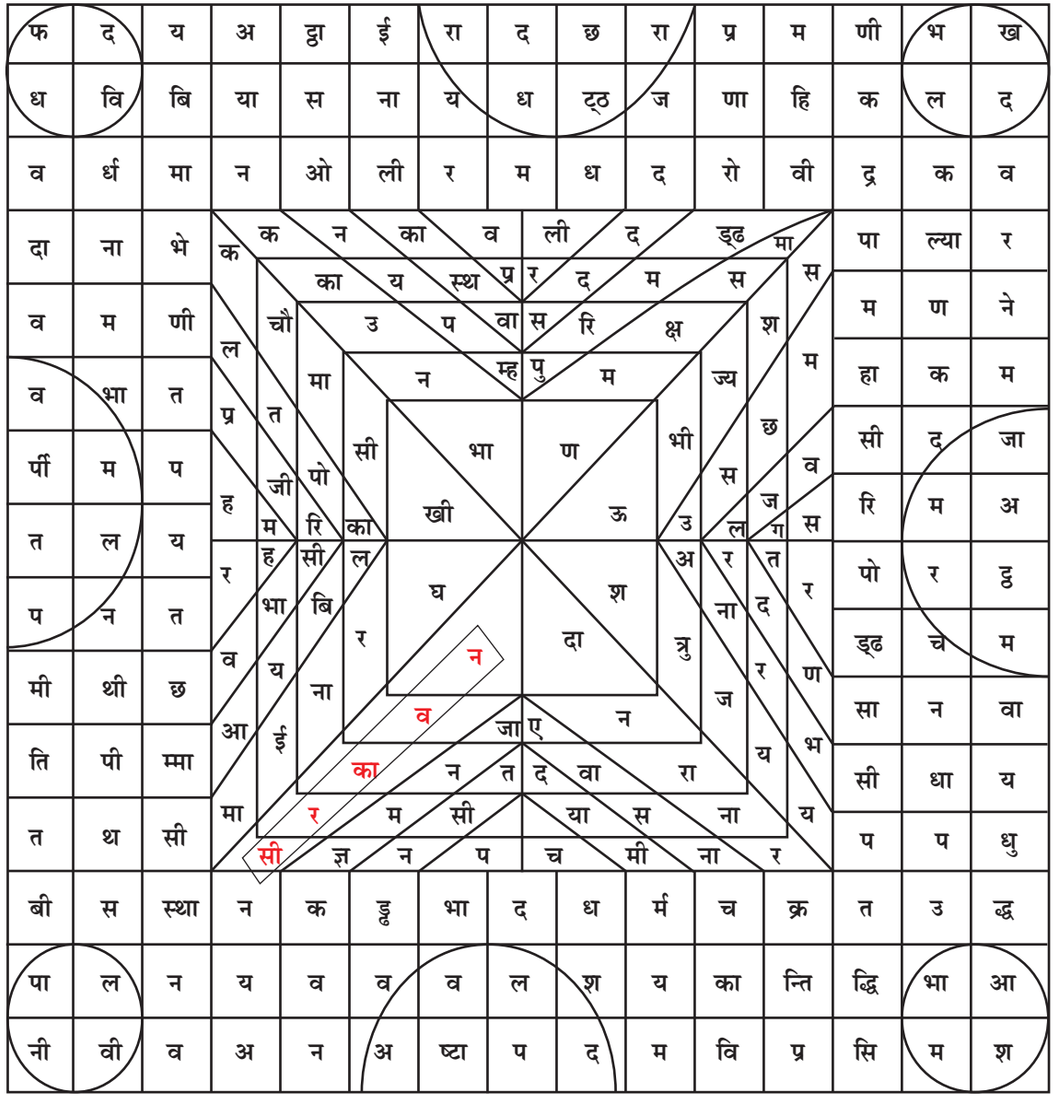

तप के नाम

1. ..... नवकारसी .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....
6. .....
7. .....
8. .....
9. .....
10. .....
11. .....
12. .....
13. .....
14. .....
15. .....
16. .....
17. .....
18. .....
19. .....
20. .....
21. .....
22. .....
23. .....
24. .....
25. .....
26. .....
27. .....
28. .....
29. .....
30. .....

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 अगस्त तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल सितम्बर में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर जहाज मंदिर में छपे फार्म में ही भरकर भेजे। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकार नहीं की जायेगी।
7. प्रेषक पहेली का उत्तर जहाज मंदिर पत्रिका के कार्यालय पर भारतीय डाक से ही पोस्ट करें।
8. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
9. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-

शा. सुगनचंदजी
राजेशकुमारजी बरडिया
(छबड़ा)
ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | |

जटा शंकर

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

घटाशंकर घबराकर डॉक्टर जटाशंकर के पास पहुँचा था। क्योंकि वह पिछले दो तीन दिनों से अनुभव कर रहा था कि उसकी टांगें नीली पड रही है। चलने की ताकत न रही। उसने टेक्सी पकडी और डॉक्टर के पास गया।

डॉक्टर ने उसकी टांगें चेक की। उसके माथे पर चिंता की सलवटें पड गई। उसने कहा- भैया! तेरी टांगों में तो जहर फैल रहा है। इन्हें काटना होगा। यदि जल्दी ही यह निर्णय नहीं किया गया तो जहर पूरे शरीर में फैल जायेगा। तुम्हें घंटे दो घंटे में ही तय करना होगा। तुम्हारे दोनों ही पांव जहरीले हो चुके हैं। एक विशेष प्रकार का जहर फैल गया है। जो नीचे से ऊपर की ओर फैलता जा रहा है।

घटाशंकर घबरा गया। पूरा परिवार चिंता मग्न हो उठा। क्या करें! आखिर निर्णय किया कि पूरे शरीर में जहर फैल जाय तो मृत्यु हो जाय, इससे तो यही अच्छा है कि टांगों को बिदा कर दें।

डॉक्टर ने शीघ्र ही ऑपरेशन कर दिया। दोनों पाँव कट गये। उसके स्थान पर नकली टांगें लगा दी गई। कुछ दिनों बाद वह फिर चिंता-मग्न होता हुआ डॉक्टर के पास पहुँचा। उसने अपनी नकली टांगें दिखाकर कहा- डॉक्टर साहब! ये मेरी नकली टांगें भी नीली पड गई है। डॉक्टर विचार में पड गया।

थोडी देर बाद हँसता हुआ बोला- अरे! तुम्हारी नीली टांगों का राज अब समझ में आ गया। और कुछ नहीं। तुम जो नीले रंग का पायजामा पहनते हो, बस! वही रंग छोड रहा है।

घटाशंकर रोने लगा। मेरी दोनों टांगें आपने ऐसे ही अलग कर दी। जबकि असली कारण कुछ और ही था। डॉक्टर बोला- मुझे माफ कर दो भैया! मैं पहले समझ नहीं पाया।

नासमझी में लिये गये निर्णय ऐसे ही तो नुकसान करते हैं। कुछ नुकसान ऐसे होते हैं, जिनकी भरपाई हो सकती है। पर कुछ नुकसान ऐसे होते हैं, जिनकी भरपाई असंभव है। पांव एक बार काट दिया, अब माफी से तो दुबारा लग नहीं सकते। इसी प्रकार एक बार आपने जीवन गंवा दिया, दुबारा मिलना बहुत मुश्किल है।

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2012- 2014 Date of Posting 7th

श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रभु

दादा गुरु श्री जिनकुशलसूरि

कृपा
गण. पूज्य श्री सुखसागरजी म.

आशीष पूज्य आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म.

निश्रा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.

पाथेय पूजनीया गुरुवर्या
श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.

प्रेरणा गुरुवर्या श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा.

वंदना...

वंदनकर्त्ता - श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं दादावाडी ट्रस्ट, आडगांव-नाशिक

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, मांडवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिराजी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.blogspot.in

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408